SAGE | bhasha

भारतीय भाषाओं में प्रकाशन कार्यक्रम

शैक्षणिक संसाधन

हिंदी पुस्तक सूची-पत्र | 2019-2020

www.sagebhasha.com

प्रिय ग्राहक,

'सेज भाषा' के हिंदी पुस्तक सूची–पत्र (कैटेलॉग) का उद्देश्य है कि हम अपनी नवीन एवं बेस्टसेलर पुस्तकों के समग्र संग्रह के माध्यम से अपने परिपूर्ण संग्रह से आपका परिचय करा सकें।

हम अपने पाठकों को सामाजिक विज्ञान क्षेत्र में यथा अनुसंधान विधियों, राजनीति, समाजशास्त्र, इतिहास, शासन, मनोविज्ञान, शिक्षा, अर्थशास्त्र और विकास अध्ययन एवं शैक्षणिक उपकरणों से संबंधित अद्वितीय संसाधनों की आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं।

विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर आधिकारिक, अंतः विषयी और सर्वोत्तम सामग्री के माध्यम से छात्रों और शोधकर्ताओं, दोनों को ही समान रूप से सहायता प्रदान के उद्देश्य से हमारे वार्षिक पुस्तक सूची–पत्र को 'वन–स्टॉप पॉइंट' के रूप में तैयार किया गया है।

'सेज भाषा' की हमारी संपूर्ण पुस्तक श्रृंखला की जानकारी के लिए देखें www.sagebhasha.com। हमारी विशेष संस्तुतियों/छूट या उपयुक्त पुस्तकों के चयन में सहायता के लिए कृपया bhashasales@sagepub.in को लिखें।

'सेज' की नवीन एवं आगामी पुस्तकों की अद्यतन जानकारी पाने के लिए marketing@sagepub.in को लिखें।

आशा है कि आपका अमूल्य सहयोग हमें प्राप्त होगा।

भवदीय

सेज मार्केटिंग

विषय सूची

समाजशास्त्र 1–7
इतिहास 7–8
समाज कार्य 8
राजनीति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध 9–12
शासन अध्ययन 12–13
नीति अध्ययन 13
शहरी अध्ययन 13
स्वास्थ्य 13
अर्थशास्त्र एवं विकास अध्ययन 14–15
पयार्वरण अध्ययन 16
शिक्षा 16–17
मनोविज्ञान 17
विशेष आवश्यकता शिक्षा 17
शांति एवं संघर्ष अध्ययन 18
विधि एवं दंड न्याय 18–19
शैक्षणिक साधन 19
मीडिया और संचार 20
शोध विधियां 21–22

क्या आपके लेखन का क्षेत्र सामाजिक विज्ञान है और आप अपनी पुस्तक प्रकाशित कराना चाहते हैं?

सेज के साथ कीजिए प्रकाशन

हम इन विषयों में प्रकाशन करते हैं:

- समाजशास्त्र
- मनोविज्ञान
- शिक्षा
- शहरी अध्ययन
- विधि एवं दंड–न्याय
- अर्थशास्त्र एवं विकास
- शोध विधियां राजनीतिक व अंतरराष्ट्रीय संबंध
- स्वास्थ्य एवं समाज कार्य

अपनी पांडुलिपि भेजने के लिए sagebhasha@sagepub.in को लिखें

₹ 645

भगवा बनाम तिरंगा

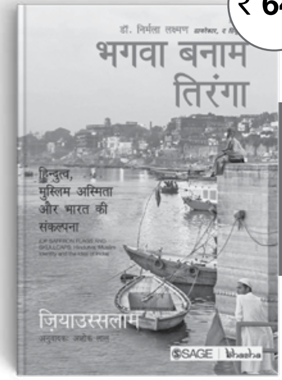

मराठी में भी उपलब्ध

हिन्दुत्व, मुस्लिम अस्मिता और भारत की संकल्पना

कुछ उग्र हिन्दुत्व शक्तियाँ अपने संकीर्ण दृष्टिकोण एवं राष्ट्रवाद की आड़ में मुहम्मद इक़बाल द्वारा राम को 'इमाम-ए-हिन्द' कह कर पुकारे जाने को और उनके गीत 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' को भुला चुकी हैं। उनकी अस्पृश्यता और अलगाववादी राजनीति संकुचित मानसिकता वाली एक ऐसी "हम" और "वो" की दुनिया का निर्माण करती है जहाँ "वन्दे मातरम्" बोलने से इंकार करने पर एक मुसलमान की सरेआम पीट-पीट कर हत्या कर दी जाती है ।

लेखक

ज़ियाउस्सलाम जाने माने साहित्यिक और सामाजिक समालोचक हैं। वर्तमान में आप 'फ्रंटलाइन' पत्रिका के सह-संपादक हैं।

2019 • 240 pages • HB (978-93-532-8563-0)

₹ 995

भारत में बौद्ध धर्म

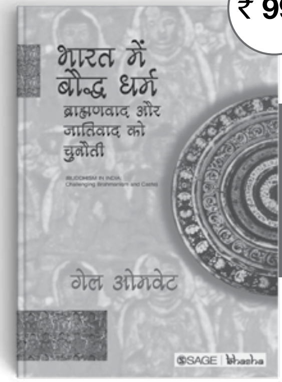

मराठी में भी उपलब्ध

ब्राह्मणवाद और जातिवाद को चुनौती

इस पुस्तक में भारत में बौद्ध धर्म, ब्राह्मणवाद तथा जाति के 2500 वर्षों के विकास की पड़ताल की गई है। लेखिका ने बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक आयामों का विवरण देने के लिए प्राचीन बौद्ध ग्रंथों तथा आधुनिक साहित्य का उपयोग किया है।

लेखक

गेल ओमवेट, इग्नू (IGNOU) में सामाजिक परिवर्तन और विकास की डॉ. बी. आर. अम्बेडकर पीठ की भूतपूर्व चेयर प्रोफ़ेसर हैं।

2019 • 372 pages • HB (978-93-515-0675-1)

₹ 550

परिकल्पित हिन्दू धर्म

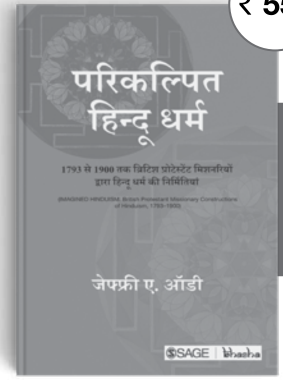

मराठी में भी उपलब्ध

1793 से 1900 तक ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरियों द्वारा हिन्दू धर्म की निर्मितियां

यह पुस्तक 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरियों के मध्य विकसित हुई हिन्दू धर्म की अवधारणा के उद्भव और परिष्करण का विश्लेषण करती है। यह इतिहास, धर्म तथा समाज, मानवविज्ञान, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र और राजनीति विज्ञान के छात्रों के लिए उपयोगी है।

लेखक

जेफ्फ्री ए. ऑडी, वरिष्ठ मानद व्याख्याता, इतिहास विभाग, सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया।

2019 • 392 pages • PB (978-93-532-8253-0)

₹ 450

अस्मिता और धर्म

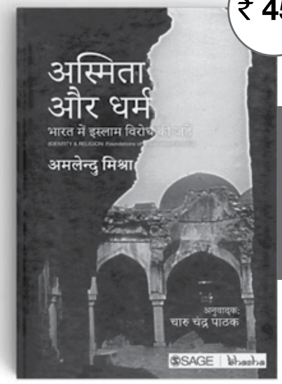

मराठी में भी उपलब्ध

भारत में इस्लाम विरोध की जड़ें

हिन्दू-मुस्लिम तनाव का आधार महत्त्वपूर्ण है, लेकिन इसे अभी तक कम समझा गया है। इसी आधार का सामयिक एवं विचारोत्तेजक विवरण इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों को आकर्षित करेगा। यह पुस्तक उन्हें भी आकर्षित करेगी जो जातीयता, धर्म, सांप्रदायिक राजनीति और भारतीय राज्यव्यवस्था की वर्तमान दशा को लेकर चिंतित हैं।

लेखक

अमलेन्दु मिश्रा, लैंकेस्टर विश्वविद्यालय, यूके में राजनीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा धर्म विभाग में वरिष्ठ प्रवक्ता हैं।

2018 • 300 pages • PB (978-93-528-0840-3)

₹ 550

धर्मनिरपेक्षता

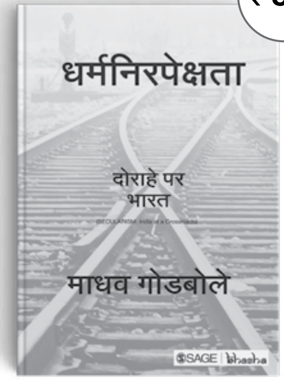

दोराहे पर भारत

धर्मनिरपेक्षता की क्रियाशीलता को समर्पित यह पहली पुस्तक है। धर्मनिरपेक्षता के सशक्तिकरण हेतु लेखक ने कई सुझाव दिए हैं। यह पुस्तक देश के युवाओं, राजनीतिक दलों, विधि-निर्माताओं, पेशेवरों, शैक्षणिक समुदाय, मीडिया, सामाजिक विचारकों और राय-निर्माताओं के लिए पठनीय है।

लेखक

माधव गोडबोले, पूर्व केंद्रीय गृह सचिव व न्याय सचिव, भारत सरकार

2018 • 389 pages • PB (978-93-528-0470-2)

₹ 375

हिंदुत्व-मुक्त भारत

मराठी में भी उपलब्ध

दलित-बहुजन, सामाजिक-आध्यात्मिक और वैज्ञानिक क्रांति पर मंथन

उत्कृष्ट पुस्तक, *व्हाय आई एम नॉट ए हिन्दू*, के लेखक कांचा अइलैय्या, भारत में ब्राम्हणवाद एवं जाति व्यवस्था की समालोचना करते हुए इसकी विज्ञान-विरोधी एवं राष्ट्रवादी-विरोधी प्रवृत्ति के प्रत्यक्ष परिणाम के तौर पर हिंदुत्व के प्रयाण की आशंका व्यक्त करते हैं।

लेखक

कांचा अइलैय्या, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, तेलंगाना

2017 • 328 pages • PB (978-93-859-8545-4)

₹ 545

भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि 6e

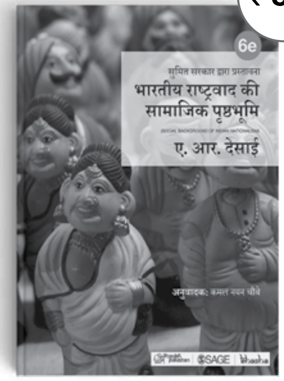

इस पुस्तक में लगभग डेढ़ सदी में हुए भारतीय समाज के रूपांतरण तथा परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वरूपों के उत्थान का अध्ययन किया गया है। यह भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति का ऐतिहासिक, संश्लेषित और क्रमबद्ध विवरण देती है।

लेखक

ए. आर. देसाई (1915-1994) मुंबई विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख एवं प्रोफ़ेसर थे।

2018 • 320 pages • PB (978-93-528-0792-5)

₹ 425

भारत में सामाजिक आंदोलन 2e

मराठी में भी उपलब्ध

संबंधित साहित्य की एक समीक्षा

सामाजिक आन्दोलन मुख्यत: राजनीतिक एवं/अथवा सामाजिक परिवर्तन के लिए गैर-संस्थागत सामूहिक राजनीतिक प्रयास का एक रूप है। इस पुस्तक के पूर्णत: संशोधित संस्करण में 1857 से लेकर अब तक हुए सामाजिक आन्दोलनों से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

लेखक

घनश्याम शाह हॉलैंड्स इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडी इन द ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंसेस, वासेनार

2015 • 270 pages • PB (978-93-515-0600-3)

₹ 645

दलित सशक्तिकरण

मराठी में भी उपलब्ध

सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण

दलित सशक्तिकरण चार परस्पर संबंधित मुद्दों को संबोधित करती है। यह भारतीय समाज में बहिष्कृत और स्वदेशी समूहों के बहिष्करण संबंधी पृथक्करण की अवधारणा का निर्माण करती है। प्रस्तुत पुस्तक सामाजिक बहिष्करण की संकल्पना और अर्थ को सामान्य रूप में तथा जाति, अस्पृश्यता और नस्ल-आधारित बहिष्कार की अवधारणा और अर्थ को विशेष सन्दर्भ में विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करती है।

संपादक

सुखदेव थोरात (पीएचडी), एमेरिटस प्रोफ़ेसर, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली
निधि सदाना सभरवाल (पीएचडी), एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च इन हायर एजुकेशन, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (NIEPA), नई दिल्ली।

2019 • 332 pages • HB (978-93-532-8557-9)

₹ 325

भारत में जाति एवं प्रजाति 5e

यह पुस्तक समाजविज्ञान एवं मानवजाति विज्ञान के छात्रों के लिए मौलिक रचना रही है। यह उप-जातियों के उद्भव का विस्तार से वर्णन करने के साथ ही जाति, उप-जाति एवं सगोत्रता का परीक्षण करती है। यह उदाहरणों के द्वारा जाति एवं राजनीति के संबंधों का विश्लेषण भी करती है।

लेखक

जी.एस. घुर्ये मुंबई विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर थे। संस्कृत, भारतीय विद्या, मानवजाति विज्ञान एवं इतिहास के प्रतिभाशाली विद्वान रहे प्रो. घुर्ये को समाजशास्त्रीय साहित्य के प्रति उनके अमूल्य एवं मौलिक योगदानों के लिए जाना जाता है।

2017 • 284 pages • PB (978-93-528-0443-6)

₹ 475

जाति व्यवस्था की नई समीक्षा

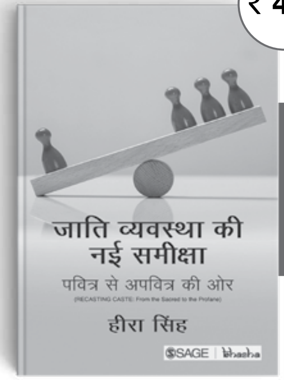

मराठी में भी उपलब्ध

पवित्र से अपवित्र की ओर

यह पुस्तक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से जाति व्यवस्था के आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक घटकों के पारस्परिक टकराव का परीक्षण करती है। ऐतिहासिक-नृजातीय साक्ष्यों के आधार पर वे तर्क देते हैं कि हिन्दुत्व ने जाति का निर्माण नहीं किया और बिना जाति का हिन्दुत्व कोई आदर्श-लोक नहीं है।

लेखक

हीरा सिंह, यॉर्क विश्वविद्यालय, टोरंटो में समाजशास्त्र पढ़ाते हैं।

2019 • 324 pages • PB (978-93-532-8279-0)

₹ 230

बूंद में सागर

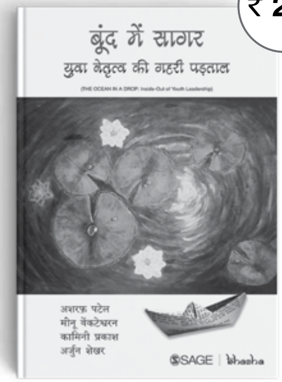

युवा नेतृत्व की गहरी पड़ताल

बूंद में सागर, अतीत में युवाओं के योगदान की पड़ताल करती है और उन्हें दोबारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का सुझाव देती है। इस पुस्तक में तर्क दिया गया है कि, राष्ट्र निर्माण हेतु युवाओं को एक बार फिर आगे आने की आवश्यकता है।

लेखक

अशरफ़ पटेल, संस्थापक सदस्य, प्रवाह एंड कम्युटिनी - द यूथ कलेक्टिव, नई दिल्ली
मीनू वेंकटेश्वरन, संस्थापक सदस्य, प्रवाह एंड कम्युटिनी - द यूथ कलेक्टिव, नई दिल्ली
कामिनी प्रकाश, निदेशक, रिसर्च फंक्शन, प्रवाह, नई दिल्ली
अर्जुन शेखर, संस्थापक सदस्य, प्रवाह एंड कम्युटिनी - द यूथ कलेक्टिव, नई दिल्ली

2016 • 234 pages • PB (978-93-859-8546-1)

₹ 275

अनमोल बेटियां

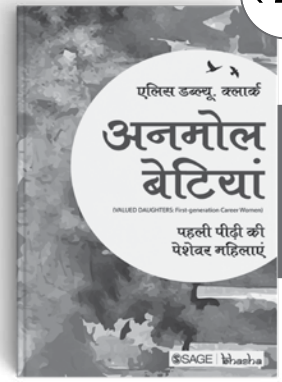

मराठी में भी उपलब्ध

पहली पीढ़ी की पेशेवर महिलाएं

यह पुस्तक शहरी भारत की ऐसी युवा महिलाओं के बीच जीवन पर्यंत चलने वाले करियर के लिए महत्वाकांक्षा के विस्तार की पड़ताल करती है, जो उच्च शिक्षा और शहरों में नौकरियां पाने के लिए अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर बदलाव ला रही हैं।

लेखक

एलिस डब्ल्यू. क्लार्क एक इतिहासकार और भारत में लैंगिकता और सामाजिक अध्ययन की विद्वान हैं। साथ ही वे यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया–बर्कले एक्सटेंशन में अनुदेशक भी रही हैं।

2017 • 196 pages • PB (978-93-864-4664-0)

₹ 275

परदे से पिकाडिली तक

अपनी पहचान के लिए एक मुस्लिम महिला का संघर्ष

बँटवारे से पहले के भारत में जन्मी एक मुस्लिम महिला ज़रीना भट्टी की ज़िंदगी पर आधारित यह क़िताब ऐसी औरत के अनुभवों को प्रस्तुत करती है, जिसने उसके समय के समाज द्वारा थोपी गई घिसी-पिटी भूमिका के विरुद्ध संघर्ष किया।

लेखक

ज़रीना भट्टी इंडियन एसोसिएशन फ़ॉर विमन्स स्टडीज़ (आईएडब्ल्यूएस), नई दिल्ली की पूर्व अध्यक्ष हैं।

2017 • 218 pages • PB (978-93-528-0168-8)

₹ 275

जननी

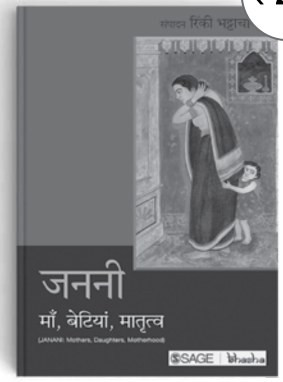

माँ, बेटियां, मातृत्व

जननी, या जीवन की निर्माता के रूप में माँ, इस कथा संग्रह का आधार है। यह संग्रह लेखन, कला, शिक्षाजगत जैसे कार्यक्षेत्रों से जुड़ी महिलाओं के उन आत्मकथात्मक लेखों को प्रस्तुत करता है, जिनमें उन्होंने माँ, बेटी या दोनों होने के अनुभव साझा किए हैं।

संपादक

रिंकी भट्टाचार्य बिमल रॉय मेमोरियल कमेटी की निदेशक हैं। वे मुंबई में नामचीन पत्रकार और वृत्तचित्र निर्माता भी हैं।

2017 • 208 pages • PB (978-93-866-0227-5)

₹ 300

भारत में घरेलू हिंसा

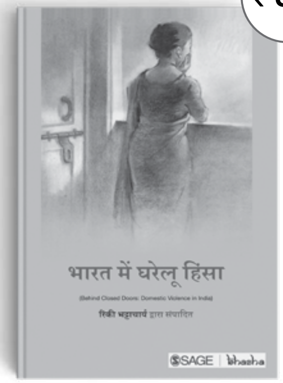

परिवार, प्रथा, मूल्यों, परम्पराओं के बंद दरवाजों के पीछे दबी हुई आतंकित आवाज़ें हैं, जो दहलीज के बाहर नहीं जा पातीं। महिला अधिकारों की कार्यकर्ता और घरेलू हिंसा की शिकार रही महिला द्वारा संपादित यह पुस्तक इन बंद दरवाजों के पीछे ले जाती है।

संपादक

रिंकी भट्टाचार्य बिमल रॉय मेमोरियल कमेटी की निदेशक हैं। वे मुंबई में नामचीन पत्रकार और वृत्तचित्र निर्माता भी हैं।

2017 • 220 pages • PB (978-93-528-0391-0)

₹ 450

भारतीय सेना में नेतृत्व

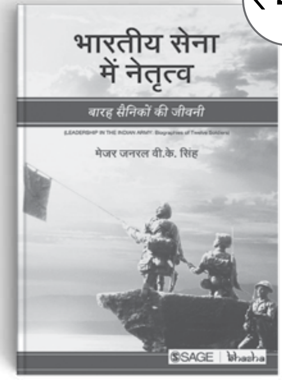

बारह सैनिकों की जीवनी

यह पुस्तक भारत में सैन्य नेतृत्व के 60 से अधिक वर्षों की अवधि के दौरान के 12 असाधारण सैन्य अधिकारियों के मानवीय पहलुओं को उजागर करती है। पुस्तक बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाओं और आज़ादी की लड़ाई के दौरान नेताओं की भूमिका एवं विभाजन पर नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती है।

लेखक

मेजर जनरल वी. के. सिंह ने जून, 1965 में भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से शिक्षा प्राप्त करने के बाद कॉर्प्स ऑफ सिग्नल्स से शुरुआत की। अपने 37 वर्षों के करियर में उन्होंने पश्चिमी कमान के प्रमुख सिग्नल ऑफ़िसर सहित विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया।

2018 • 380 pages • PB (978-93-515-0689-8)

₹ 295

मृत्यु कष्टदायी न थी

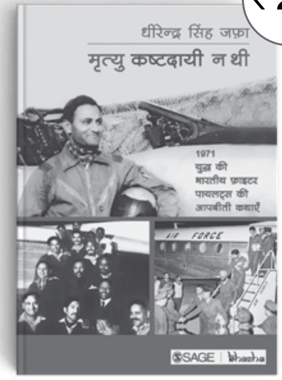

1971 युद्ध की भारतीय फ़ाइटर पायलट्स की आपबीती कथाएँ

यह पुस्तक उस पूर्व भारतीय फ़ाइटर पायलट की सच्ची कहानी है, जिसे 1971 भारत-पाक/बांग्लादेश लिबरेशन वॉर के दौरान बंदी बनाया गया था। इसमें फ़ाइटर पायलट्स के साहसिक जीवन के साथ-साथ युद्ध की भयावह हक़ीकतों पर सैनिकों की प्रतिक्रियाएं वर्णित हैं।

लेखक

धीरेन्द्र सिंह जफ़ा विंग कमांडर (रिटा.), भारतीय वायु सेना, को 1971 में हुई लड़ाई के दौरान पाकिस्तान में युद्धबन्दी बनाया गया था। रणभूमि में उनके साहस के लिए उन्हें वीर चक्र से नवाज़ा गया।

2017 • 254 pages • PB (978-93-859-8547-8)

₹ 325

पहला नक्सली

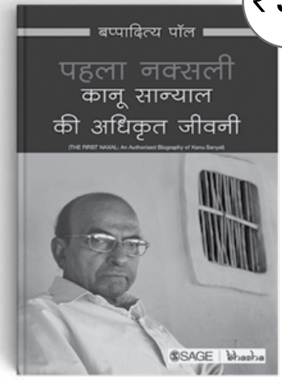

कानू सान्याल की अधिकृत जीवनी

कानू सान्याल की पूरी कहानी बयां करने वाली यह पुस्तक एक विद्रोही के रूप में सान्याल की क्रमागत उन्नति पर विशद जानकारी प्रदान करती है और नक्सली आंदोलन की पृष्ठभूमि की प्रासंगिक जानकारी के साथ उसके विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालती है।

लेखक

बप्पादित्य पॉल, न्यूज़मेन, कोलकाता के संपादक हैं।

2017 • 228 pages • PB (978-93-859-8551-5)

₹ 250

वन लिटिल फिंगर

वन लिटिल फिंगर मालिनी चिब की आत्मकथा है - एक ऐसी महिला जिसने पूर्णतः अशक्त कर देने वाली विकलांगता और समाज की उदासीनता के बावजूद सभी कठिनाइयों को चुनौती देते हुए खुद को इन परिस्थितियों से बाहर निकालने में सफलता पाई।

लेखक

मालिनी चिब मुंबई के ऑक्सफोर्ड बुकस्टोर में वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक हैं और एडैप्ट (एबल डिसएबल ऑल पीपल टुगैदर) राईट्स ग्रुप की सह-अध्यक्ष तथा संस्थापक भी हैं।

2016 • 204 pages • PB (978-93-515-0683-6)

₹ 395

भारत में दलित

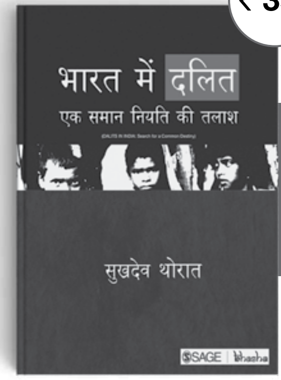

मराठी में भी उपलब्ध

एक समान नियति की तलाश

यह पुस्तक मानव विकास और सामाजिक एवं आर्थिक सूचकों के भारत एवं राज्य स्तरीय विश्लेषण के जरिये देश में दलितों की स्थिति की पड़ताल करती है। यह दलितों को मुख्यधारा के विकास से अलग करने वाली प्रक्रियाओं एवं पहलुओं पर विस्तृत चर्चा करती है।

लेखक

सुखदेव थोरात अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, और पूर्व अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

2017 • 350 pages • PB (978-93-859-8544-7)

₹ 450

दलित और प्रजातान्त्रिक क्रान्ति

उपनिवेशीय भारत में डॉ. अम्बेडकर एवं दलित आन्दोलन

इस पुस्तक में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से 1956 में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की मृत्यु तक के दलित आन्दोलनों के इतिहास और इसके संगठनात्मक स्वरूप एवं विचारधारा के साथ-साथ 'वर्ग' संघर्षों तथा स्वतंत्रता संग्राम, दोनों पर इसके पारस्परिक प्रभाव का विश्लेषण है।

लेखक

गेल ओमवेट इग्नू (IGNOU) में सामाजिक परिवर्तन और विकास की डॉ. बी. आर. अम्बेडकर पीठ की भूतपूर्व चेयर प्रोफेसर हैं।

2015 • 343 pages • PB (978-93-515-0598-3)

₹ 600

गाँधी बोध

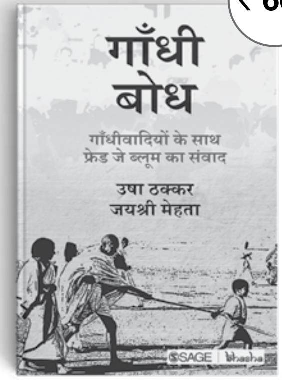

गाँधीवादियों के साथ फ्रेड जे ब्लूम का संवाद

यह पुस्तक महात्मा गाँधी के निकटतम 6 सहयोगियों, जेबी कृपलानी, रेहना तैयबजी, दादा धर्माधिकारी, सुशीला नायर, झवेर पटेल और सुचेता कृपलानी के साक्षात्कारों का संकलन है। ये साक्षात्कार स्वतंत्रता के बाद भारत में हुए परिवर्तनों के प्रकाश में गाँधी के विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं।

लेखक

उषा ठक्कर मणि भवन गाँधी संग्रहालय, मुंबई की अध्यक्ष हैं। वे एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई के राजनीति विज्ञान विभाग में प्रोफ़ेसर और प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। **जयश्री मेहता** मेडिकल काउंसिल ऑफ़ इंडिया की अध्यक्ष हैं। सुमनदीप विद्यापीठ विश्वविद्यालय, गुजरात की कुलपति भी रही हैं।

2017 • 528 pages • PB (978-93-528-0455-9)

₹ 450

आधुनिक भारत में दलित 2e

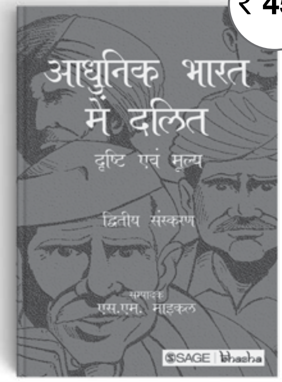

दृष्टि एवं मूल्य

यह द्वितीय एवं परिवर्धित संस्करण, अधिकारहीन दलितों की आकांक्षाओं एवं संघर्षों का पुनरावलोकन करती है तथा समानता, सामाजिक न्याय एवं मानवीय गरिमा पर आधारित मानवता पर विचार करती है। यह दलितों के रूपान्तरण के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्वों की खोज करती है।

संपादक

एस.एम. माइकल रीडर, समाजशास्त्र विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय तथा मानद निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ इंडियन कल्चर

2015 • 343 pages • PB (978-93-515-0594-5)

₹ 425

अटलांटिक गाँधी

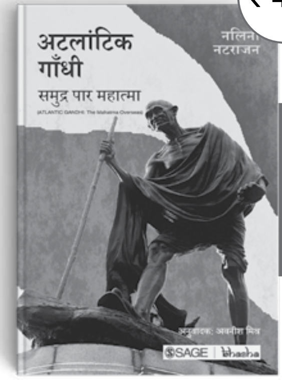

मराठी में भी उपलब्ध

समुद्र पार महात्मा

प्रवासी सिद्धांत, उत्तर-औपनिवेशिक संवाद तथा प्रतिरोधों के अध्ययन के अटलांटिक पहलू जैसे ढांचों का प्रयोग करते हुए यह पुस्तक भारत जैसे पुरातन उपनिवेश से दक्षिण अफ्रीका के बागान एवं खनन समाज तक की गाँधी की यात्रा के अनुभवों का वर्णन करती है।

लेखक

नलिनी नटराजन वर्तमान में अंग्रेज़ी विभाग, कॉलेज ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़, पोर्टो रीको विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी की प्रोफ़ेसर हैं।

2019 • 296 pages • PB (978-93-532-8185-4)

₹ 495

खादी

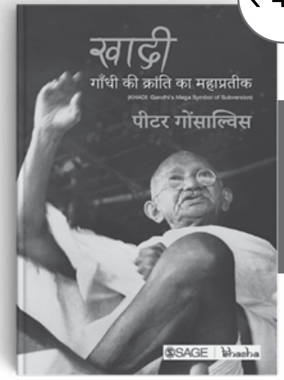

मराठी में भी उपलब्ध

गाँधी की क्रांति का महाप्रतीक

यह पुस्तक महात्मा गाँधी द्वारा एकता, सशक्तीकरण और साम्राज्य-संबंधी अधीनता से मुक्ति के रूपक के रूप में पहनावे के उपयोग का अध्ययन कर, समाज में गुणात्मक परिवर्तन हेतु प्रतीक की शक्ति की विवेचना करती है। यह दक्षिण एशियाई शोध क्षेत्रों के छात्रों के लिए उपयोगी है।

लेखक

पीटर गोंसाल्विस, पीएचडी, सलिज़ियन पॉन्टिफिकल यूनिवर्सिटी, रोम में सामाजिक संप्रेषण विज्ञान विषय पढ़ाते हैं।

2019 • 304 pages • PB (978-93-532-8213-4)

₹ 250

आरएसएस, स्कूली पाठ्यपुस्तकें और महात्मा गाँधी की हत्या

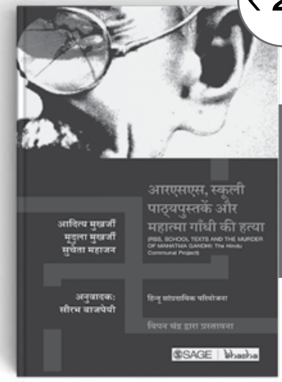

मराठी में भी उपलब्ध

हिन्दू सांप्रदायिक परियोजना

यह पुस्तक तीन भिन्न मुद्दों, आरएसएस स्कूली पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति, महात्मा की हत्या और सावरकर तथा गोलवलकर द्वारा व्यक्त मूल हिन्दू सांप्रदायिक विचारधारा को एक साथ प्रस्तुत करती है। इन पहलुओं पर गहन शोध करते हुए पुस्तक एक दूसरे पर इनके प्रभावों को सामने लाती है।

लेखक

आदित्य मुखर्जी सेंटर फ़ॉर हिस्टोरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली में समकालीन भारतीय इतिहास के प्रोफेसर हैं।

मृदुला मुखर्जी सेंटर फ़ॉर हिस्टोरिकल स्टडीज़, जेएनयू में समकालीन भारतीय इतिहास की प्रोफ़ेसर रही हैं।

सुचेता महाजन आधुनिक भारतीय इतिहास की प्रोफ़ेसर हैं तथा सेंटर फ़ॉर हिस्टोरिकल स्टडीज़, जेएनयू की अध्यक्ष रही हैं।

2018 • 116 pages • PB (978-93-532-8114-4)

₹ 395

गाँधी और अली बंधु

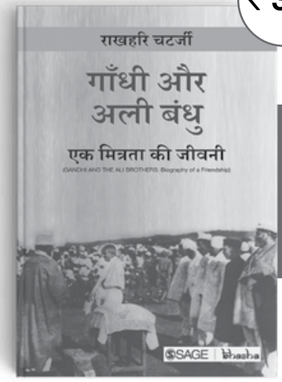

मराठी में भी उपलब्ध

एक मित्रता की जीवनी

यह पुस्तक गाँधी और अली बंधुओं के साझे मंच पर आने, उनके संयुक्त संघर्ष एवं उनके अलगाव का वृत्तांत कहती है। यह हिन्दू-मुस्लिम संयोजन के बदलावों की पृष्ठभूमि में, इन राजनीतिक हस्तियों के व्यक्तिगत संबंधों के महत्त्वपूर्ण पड़ावों का स्पष्ट, सूक्ष्म-ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

लेखक

राखहरि चटर्जी, राजनीति विज्ञान के यूजीसी मानद सदस्य, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

2019 • 204 pages • PB (978-93-532-8243-1)

₹ 325

बोस बंधु और भारतीय स्वतंत्रता

मराठी में भी उपलब्ध

एक क़रीबी का विवरण

यह पुस्तक स्वतंत्रता संग्राम में शरत और सुभाष चंद्र बोस की भूमिका का इतिहास प्रस्तुत करती है। इसका स्रोत अमीय नाथ बोस के निजी वृत्तांत हैं, जो उनके राजनीतिक सहयोगी एवं बेहद क़रीबी होने के अलावा विश्वासपात्र एवं भरोसेमंद दूत भी थे।

लेखक

माधुरी बोस शरत चंद्र बोस और सुभाष चंद्र बोस की पोती हैं। वे जेनेवा व पूर्वी अफ्रीका की संयुक्त राष्ट्र एजेंसी और लंदन के कॉमनवेल्थ सचिवालय से जुड़ी मानवाधिकार अधिवक्ता हैं।

2017 • 280 pages • PB (978-93-859-8549-2)

₹ 525

प्राचीन भारत की अवधारणा

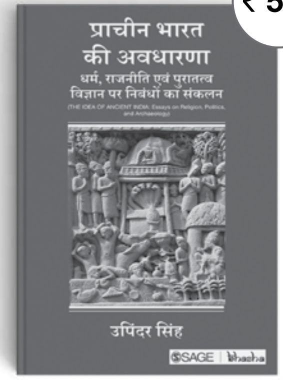

धर्म, राजनीति एवं पुरातत्व विज्ञान पर निबंधों का संकलन

यह पुस्तक प्राचीन भारत को समझने पर केंद्रित विभिन्न दृष्टिकोणों एवं मुद्दों की दिशा में अहम योगदान है। यह पुस्तक प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन के कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों, विचार-विमर्श और कार्यप्रणालियों के साथ जुड़ी हुई है।

लेखक

उपिंदर सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं।

2019 • 508 pages • PB (978-93-515-0646-1)

₹ 545

भारतीय इतिहास का अध्ययन एक परिचय 2e

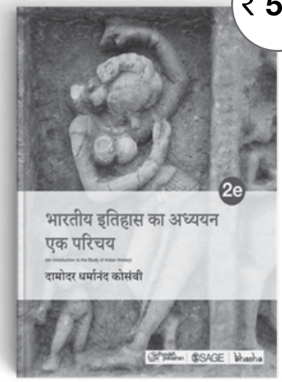

प्रागैतिहासिक जनजातीय समाज से लेकर आधुनिक मशीनी युग तक के विकास का विश्लेषण करते हुए, वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक चिंतन के दृष्टिकेण से नए अनुसंधान क्षेत्रों में यह पुस्तक मार्गदर्शक साबित होगी। यह स्मारकों, रीति-रिवाजों और बचे हुए अभिलेखों द्वारा इतिहास की गहराई में झाँकते हुए वर्तमान को ऐतिहासिक विकास के अपरिहार्य परिणाम के रूप में दर्शाती है।

लेखक

दामोदर धर्मानंद कोसंबी भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में विचारोत्तेजक पुस्तकों के लेखक हैं। उनकी प्रमुख पुस्तकों में मिथ एंड रियलिटी, द कल्चर एंड सिविलाइज़ेशन ऑफ़ एंशिएंट इंडिया और एग्ज़ैस्परेटिंग एसेज शामिल हैं।

2019 • 286 pages • PB (978-93-528-0588-4)

₹ 375

सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए कौशल प्रशिक्षण

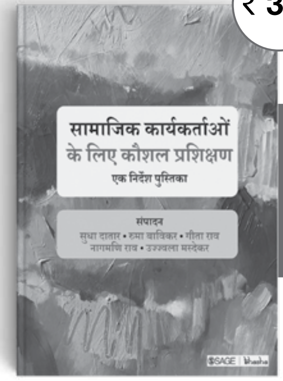

मराठी में भी उपलब्ध

एक निर्देश पुस्तिका

यह पुस्तक समाज कार्य के शिक्षकों और छात्रों के लिए स्वदेशी पाठ्यपुस्तक व शिक्षण सामग्री की मांग पूरी करती है। समाज कार्य की विधियों के लिए आवश्यक कौशलों के विकास के लिए इस निर्देश पुस्तिका में ठोस अभ्यास दिए गए हैं।

संपादक

सुधा दातार कर्वे समाज सेवा संस्था (केआईएसएस), पुणे की सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका थीं।
रुमा बाविकर केआईएसएस, पुणे में एसोसिएट प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं।
गीता राव केआईएसएस, पुणे में एसोसिएट प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं।
नागमणि राव केआईएसएस, पुणे में एसोसिएट प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं।
उज्ज्वला मस्देकर केआईएसएस, पुणे में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं।

2017 • 166 pages • PB (978-93-864-4626-8)

₹ 395

भारतीय युवा और चुनावी राजनीति

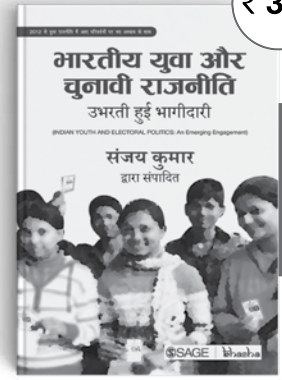

मराठी में भी उपलब्ध

उभरती हुई भागीदारी

यह पुस्तक देश में भारतीय युवावर्ग और चुनावी राजनीति के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध का अध्ययन करती है। यह राजनीतिक मुद्दों को लेकर युवाओं में जागरूकता के स्तर पर दृष्टि डालती है और चुनावी राजनीति में युवाओं की अभिरुचि और भागीदारी का विश्लेषण करती है।

संपादक

संजय कुमार, निदेशक, सेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ डेवलपिंग सोसाइटीज़ (सीएसडीएस), नई दिल्ली

2019 • 212 pages • PB (978-93-532-8225-7)

₹ 375

भारत में मतदान व्यवहार का मापन

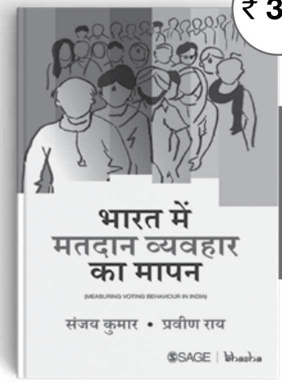

मराठी में भी उपलब्ध

यह पुस्तक भारत में, वर्तमान तथा अतीत के मतदान व्यवहार के मापन की पद्धतियों के विभिन्न पहलू प्रस्तुत करती है। लेखकों ने मतदाताओं की राय, दृष्टिकोणों और पूर्वाग्रहों के मापन की विभिन्न पद्धतियों पर विस्तार से चर्चा की है।

लेखक

संजय कुमार सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ डेवलपिंग सोसाइटीज़ (सीएसडीएस) के निदेशक हैं। साथ ही वे सीएसडीएस, दिल्ली के शोध कार्यक्रम, लोकनीति, के सह-निदेशक हैं।
प्रवीण राय सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ डेवलपिंग सोसाइटीज़, दिल्ली में राजनीतिक विश्लेषक हैं।

2018 • 180 pages • PB (978-93-528-0859-5)

₹ 745

चीन का कायापलट

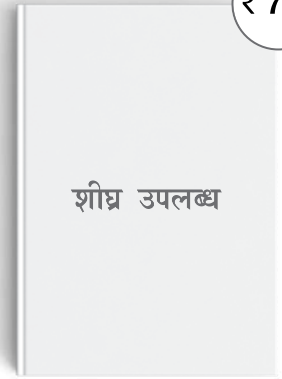

सफलता की कहानी और सफलता का जाल

यह पुस्तक दर्शाती है कि कैसे चीन की 'सुधार और खुले द्वार' की नीति का उद्भव हुआ, जिससे उसने आश्चर्यजनक आर्थिक सफलता प्राप्त की। हालांकि, इसकी वजह से उसके सामने कई गंभीर सामाजिक और पर्यावरण संबंधी समस्याएं भी पैदा हो गईं।

लेखक

मनोरंजन महांति काउंसिल फ़ॉर सोशल डेवलपमेंट (सीएसडी) के उपाध्यक्ष, डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टिट्यूट, भुवनेश्वर के अध्यक्ष तथा इंस्टिट्यूट ऑफ़ चाइनीज़ स्टडीज़ (आईसीएस), दिल्ली के मानद फ़ेलो हैं।

2019 • 416 pages • HB

₹ 435

चीन और भारत

मराठी में भी उपलब्ध

इतिहास, संस्कृति, सहयोग और प्रतिस्पर्धा

यह पुस्तक चीन और भारत के इतिहास, संस्कृति, राजनीतिक संबंधों और वर्तमान व्यापार रणनीतियों पर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। साथ ही यह दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं में अंतर की पड़ताल कर इसके उत्तरदायी कारकों की पहचान करती है।

संपादक

पारमिता मुखर्जी, प्रोफ़ेसर, इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट (आईएमआई), कोलकाता।
अर्णब के. देब, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इंटरनेशनल मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट (आईएमआई), नई दिल्ली।
मिआओ पांग, वरिष्ठ रिसर्च फ़ेलो, इंस्टिट्यूट ऑफ़ रूरल इकोनॉमी, सिचुआन एकेडमी ऑफ़ सोशल साइंसेस, सिचुआन प्रांत, चीन।

2018 • 252 pages • PB (978-93-528-0938-7)

₹ 395

भारत में राजनीतिक आंदोलनों का समकालीन इतिहास

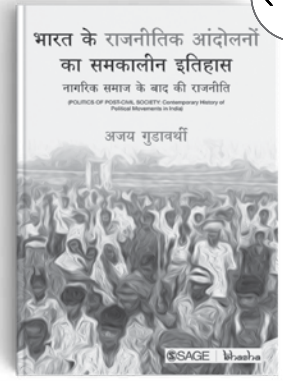

नागरिक समाज के बाद की राजनीति

यह पुस्तक हमारे समय के पांच सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलनों के विस्तृत इतिहास का अध्ययन करती है। यह पुस्तक उन विविध रणनीतियों को सामने लाती है, जिनके माध्यम से ये आंदोलन नागरिक-समाज के बाद की नई राजनीति की ओर धकेले जा रहे हैं।

लेखक

अजय गुडावर्थी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं।

2018 • 263 pages • PB (978-81-321-1041-5)

₹ 450

भारतीय प्रशासन

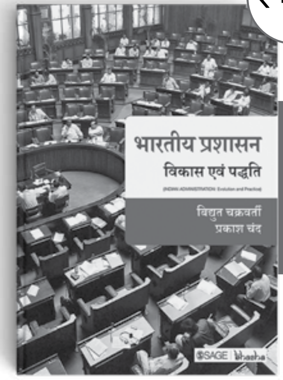

मराठी में भी उपलब्ध

विकास एवं पद्धति

यह पुस्तक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लोक प्रशासन की संवृद्धि और विकास के समीक्षात्मक विश्लेषण के जरिये इस क्षेत्र के नए मुद्दों, चुनौतियों को संबोधित करती है, साथ ही भारतीय प्रशासनिक प्रणाली के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डालती है।

लेखक

बिद्युत चक्रवर्ती, प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।
प्रकाश चंद, सहायक प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह (ई) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

2017 • 388 pages • PB (978-93-866-0234-3)

₹ 725

वैश्वीकृत दुनिया में लोक प्रशासन

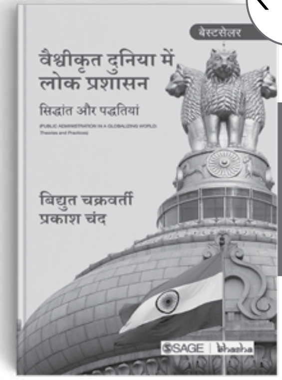

मराठी में भी उपलब्ध

सिद्धांत और पद्धतियां

यह पुस्तक वैश्वीकरण के दौर में लोक प्रशासन में हुए विकास का अध्ययन है। यह नागरिक समाज और प्रशासनिक व्यवस्थाओं में हुए बदलावों के आधार पर शासन को समझने संबंधी मुद्दों पर केंद्रित है। लोक प्रशासन और विभिन्न लोकसेवा परीक्षाओं के छात्रों के लिए उपयोगी।

लेखक

प्रकाश चंद, सहायक प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह (ई) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।
बिद्युत चक्रवर्ती, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

2018 • 503 pages • PB (978-93-515-0669-0)

₹ 450

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन

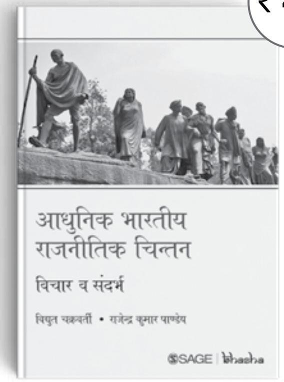

विचार व संदर्भ

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, उन छात्रों के लिए पठनीय है जो महान भारतीय राजनीतिक विचारकों की सोच एवं विषय-वस्तु से अवगत होना चाहते हैं। यह भारत में राजनीतिक चिन्तन की अपरंपरागत अभिव्यक्ति है, जिसका अभ्युदय उपनिवेशवाद के विरुद्ध राष्ट्रवादी संघर्ष के दौरान हुआ था।

लेखक

बिद्युत चक्रवर्ती, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
राजेन्द्र कुमार पाण्डेय जामिया हमदर्द, नई दिल्ली

2015 • 435 pages • PB (978-93-515-0582-2)

₹ 695

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति 2e

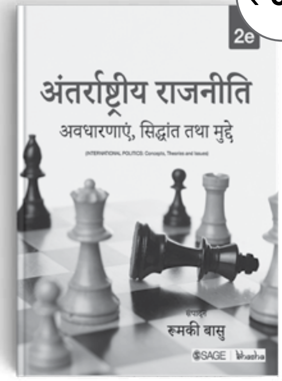

अवधारणाएं, सिद्धांत तथा मुद्दे

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति वर्तमान वैश्विक राजनीति की प्रमुख अवधारणाओं, सिद्धांतों और मुद्दों की विश्लेषणात्मक समीक्षा करती है। संशोधित संस्करण में भूमंडलीयकरण, क्षेत्रीयता, भूमंडलीय दक्षिण, भारत की विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, आतंकवाद, मानवाधिकार, विकास तथा सुरक्षा पर होने वाले विचार-विमर्श और संवाद अद्यतन हैं।

संपादक

रुमकी बासु, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

2017 • 596 pages • PB (978-93-532-8276-9)

₹ 450

आधुनिक भारत में राजनीतिक विचार

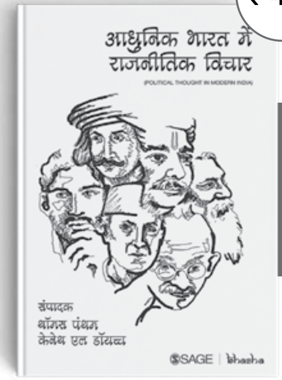

मराठी में भी उपलब्ध

इस पुस्तक में प्रबुद्ध लेखकों द्वारा लिखे गए बीस मौलिक निबंधों के माध्यम से आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के मुख्य पहलुओं का एक समग्र विश्लेषण किया गया है। यह आधुनिक राजनीतिक दर्शन में प्रमुख योगदान है। राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य।

संपादक

थॉमस पंथम एम.एस. बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा से जुड़े रहे हैं।

केनेथ एल डॉयच्च न्यूयार्क विश्वविद्यालय, जेनेसिओ में राजनीतिशास्त्र के प्रोफ़ेसर थे।

2017 • 372 pages • PB (978-93-515-0677-5)

₹ 410

भारत की विदेश नीति

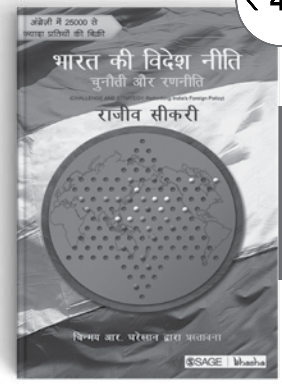

मराठी में भी उपलब्ध

चुनौती और रणनीति

यह पुस्तक भारत की विदेश नीति की आलोचना करने और विकल्प सुझाने का साहसिक प्रयास है। यह भारत की विदेश नीति से जुड़े अधिकारी वर्ग की चिंताओं को सामने लाने के साथ ही नई दिल्ली की बंद परिषदों की बहसों की झलक प्रस्तुत करती है।

लेखक

राजीव सीकरी भारतीय विदेश सेवा में 36 वर्षों से अधिक समय तक राजनयिक रहे हैं और वह भारत के विदेश मंत्रालय में सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में वे एक स्वतंत्र रणनीतिक सलाहकार के तौर पर कार्य कर रहे हैं।

2017 • 330 pages • PB (978-93-515-0687-4)

₹ 325

भारत का संविधान, वृत्तिक आचारनीति और मानव अधिकार

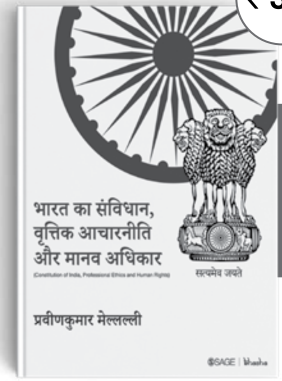

मराठी में भी उपलब्ध

यह पुस्तक भारत के संविधान, मूल मानव अधिकारों और व्यावहारिक वृत्तिक (व्यावसायिक) आचारनीति का व्यापक विहंगावलोकन प्रदान करती है। पुस्तक इन विषयों को समझना आसान बनाती है और प्रभावशाली ढंग से संविधान से जुड़े उद्देश्यों और निष्कर्षों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में मददगार है।

लेखक

प्रवीणकुमार मेल्लल्ली सहायक प्रोफ़ेसर, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर

2017 • 222 pages • PB (978-93-866-0207-7)

₹ 550

चरण सिंह और कांग्रेस राजनीति

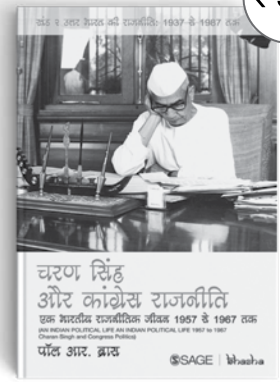

एक भारतीय राजनीतिक जीवन, 1957 से 1967 तक

लेखक के चरण सिंह के साथ व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित यह खंड चरण सिंह के कांग्रेस के प्रति असंतोष के बारे में बताता है, जो नेहरू और उनकी बेटी के उनके प्रति विरोध और उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के पतन के साथ बढ़ता गया।

लेखक

पॉल आर. ब्रास प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त), राजनीति विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, वाशिंगटन विश्वविद्यालय, सीएटल, यूएसए

2017 • 462 pages • PB (978-93-528-0452-8)

₹ 550

चरण सिंह और कांग्रेस राजनीति

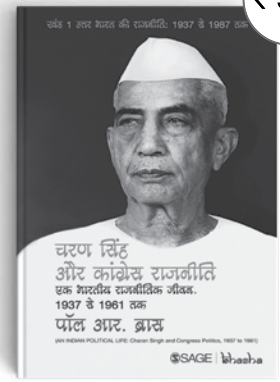

एक भारतीय राजनीतिक जीवन (1937 से 1961 तक)

यह पुस्तक 1935 से 1961 के दौर की राजनीति में चरण सिंह की भूमिका पर केंद्रित है। उस समय के बड़े मुद्दों, विवादों और गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा भी इसमें दिया गया है।

लेखक

पॉल आर. ब्रास प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त), राजनीति विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, वाशिंगटन विश्वविद्यालय, सीएटल, यूएसए

2017 • 608 pages • PB (978-93-515-0896-0)

₹ 275

लोकतंत्र का पतन

भविष्य का पुनर्निर्माण

इस पुस्तक में लेखक तर्क देते हैं कि लोकतंत्र गंभीर ख़तरे में है। राजनीति में अत्यधिक पैसा लोकतंत्र को प्रभावित कर रहा है। मतदान प्रणाली दोषपूर्ण हो चुकी है और आवश्यक बदलाव नहीं आ रहा है। कॉटलर इस निराशाजनक स्थिति के लिए संभावित समाधान सुझाते हैं।

लेखक

फ़िलिप कॉटलर केलॉग स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट, नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी की एस.सी. जॉनसन एंड सन पीठ में इंटरनेशनल मार्केटिंग विषय के विशिष्ट प्रोफ़ेसर हैं।

2017 • 184 pages • PB (978-93-864-4698-5)

₹ 375

सुशासन

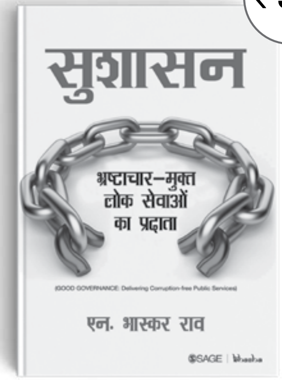

भ्रष्टाचार-मुक्त लोक सेवाओं का प्रदाता

बड़े पैमाने पर आयोजित क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित सुशासन, सार्वजनिक सेवाओं का लाभ उठाने के लिए नागरिकों द्वारा प्रोत्साहित भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति की प्राथमिक समीक्षा करती है, और सुशासन के क्रियान्वयन के तरीकों पर व्यावहारिक सुझाव प्रदान करती है।

लेखक

एन. भास्कर राव संस्थापक-अध्यक्ष, सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज़ और मार्केटिंग एंड डेवलपमेंट रिसर्च एसोसिएट्स, नई दिल्ली, भारत

2017 • 360 pages • PB (978-93-859-8548-5)

₹ 295

मूल्यों की पुन:स्थापना

मराठी में भी उपलब्ध

ईमानदारी, नैतिक व्यवहार और सुशासन की कुंजी

यह पुस्तक देश को नैतिक राष्ट्र के रूप में आकार देने का आह्वान है। इसके लेख भारत के उन प्रख्यात विचारकों और नेतृत्वकर्ताओं ने लिखे हैं, जिन्हें ईमानदारी के साथ जीने व कार्य करने की प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है।

संपादक

ई. श्रीधरन दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के प्रमुख सलाहकार और पूर्व प्रबंध निदेशक हैं।
भरत वख्लू द वख्लू एडवाइज़री के अध्यक्ष हैं।

2017 • 232 pages • PB (978-93-528-0378-1)

₹ 525

नगर और लोक नीति

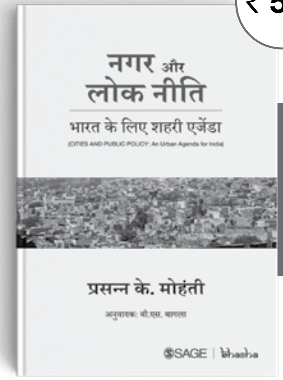

मराठी में भी उपलब्ध

भारत के लिए शहरी एजेंडा

यह पुस्तक भारत के लिए शहरीकरण कार्यसूची विकसित करने हेतु नगरों के आर्थिक सिद्धांत और उनके कुशल प्रबंधन में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों के उदाहरण देती है। साथ ही शहरीकरण की चुनौतियों का सामना करने हेतु नीतिगत उपायों और सुधारों के प्रस्ताव रखती है।

लेखक

प्रसन्न के. मोहंती हैदराबाद विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के चेयर प्रोफ़ेसर हैं। वे आंध्र प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव रह चुके हैं।

2018 • 340 pages • PB (978-93-528-0935-6)

₹ 645

भारत में जनसंख्या संबंधी मुद्दे

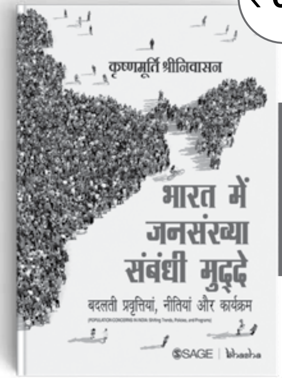

मराठी में भी उपलब्ध

बदलती प्रवृत्तियां, नीतियां एवं कार्यक्रम

जनसंख्या का मुद्दा किसी भी देश की राजनीति और विकास के लिए चिंता का प्रमुख विषय है। विशेष रूप से भारत में विभिन्न धर्मों की और अन्य सामाजिक स्तरीकरणों की विविधता के कारण हमेशा से ही यह मुद्दा समस्यात्मक रहा है। *भारत में जनसंख्या संबंधी मुद्दे: बदलती प्रवृत्तियां, नीतियां और कार्यक्रम* में इसका विश्लेषण किया गया है कि स्वतंत्रता के बाद के सात दशकों में देश ने इस समस्या को किस प्रकार नियंत्रित किया है।

लेखक

कृष्णमूर्ति श्रीनिवासन, इंस्टिट्यूट फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक चेंज, बेंगलुरु में मानद आचार्य हैं।

2019 • 328 pages • HB (978-93-532-8634-7)

₹ 450

स्क्वेटिंग विद डिगनिटी

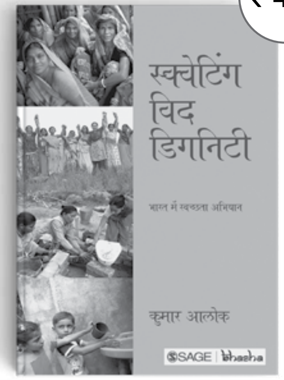

भारत में स्वच्छता अभियान

यह पुस्तक भारत में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के आरम्भिक दौर की सफलताओं व चुनौतियों का विश्लेषण करती है, जिसमें पिछले दशक की प्रगति पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह पुस्तक स्वच्छता नीति के विकास का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करती है।

लेखक

कुमार आलोक विशिष्ट पहचान प्राधिकरण, दिल्ली, भारत

2015 • 404 pages • PB (978-93-515-0592-1)

₹ 995

भारतीय अर्थव्यवस्था का संक्रमण काल

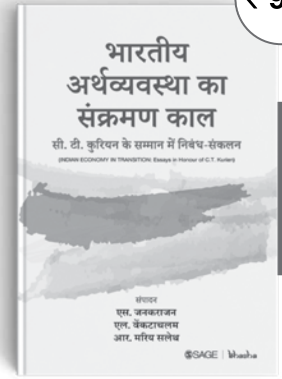

मराठी में भी उपलब्ध

सी.टी. कुरियन के सम्मान में निबंध-संकलन

यद्यपि भारत की संवृद्धि के अनुभव को अच्छे से दर्ज किया गया है, फिर भी संक्रमण की प्रक्रिया के दौरान और बाद में, सामान्य तथा क्षेत्रीय दोनों ही संदर्भों में जो मुद्दे और प्रभाव उभर कर आए हैं, वे नीति संबंधी चिंता के प्रमुख क्षेत्र बने हुए हैं। प्रोफेसर सी.टी. कुरियन के सम्मान में प्रकाशित यह संकलन पिछले डेढ़ दशक से अधिक समय में भारत की संवृद्धि के प्रदर्शन और इसके निहितार्थों का विद्वत्तापूर्ण मूल्यांकन प्रदान करता है।

संपादक

एस. जनकराजन, वर्तमान में साउथ एशिया कंसोर्टियम फॉर इंटरडिसिप्लिनरी वॉटर रिसोर्सेस स्टडीज (SaciWATERs), हैदराबाद के अध्यक्ष हैं।

एल. वेंकटाचलम, मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ डेवलपमेंट स्टडीज़ (MIDS), चेन्नई में प्रोफेसर हैं।

आर. मरिय सलेथ, मद्रास स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स (MSE) के मानद प्रोफेसर तथा MIDS, चेन्नई के भूतपूर्व निदेशक हैं।

2019 • 384 pages • HB (978-93-532-8599-9)

₹ 595

दैनिक जीवन में अर्थशास्त्र

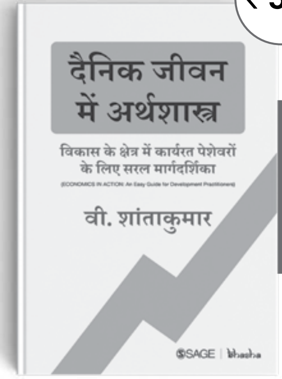

मराठी में भी उपलब्ध

विकास के क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरों के लिए सरल मार्गदर्शिका

यह पुस्तक विकास के क्षेत्र में कार्यरत उन पेशेवरों के लिए तैयार की गई है, जिन्हें अर्थशास्त्र का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है। लेखक अर्थशास्त्र को वास्तविक दुनिया की उन समस्याओं से जोड़ते हैं, जिनका सामना दैनिक जीवन में करना पड़ता है।

लेखक

वी. शांताकुमार वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु में प्रोफ़ेसर हैं।

2018 • 312 pages • PB (978-93-528-0856-4)

₹ 325

आर्थिक सुधार और सामाजिक अपवर्जन

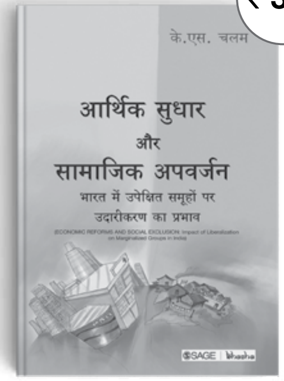

भारत में उपेक्षित समूहों पर उदारीकरण का प्रभाव

इस पुस्तक में उदारीकरण के उपरांत उपेक्षित एवं बहिष्कृत समूहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें पड़ताल की गई है कि कैसे उदार आर्थिक सुधारों ने सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों, जाति, जनजाति एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों को और भी वंचित कर दिया है।

लेखक

के. एस. चलम राजनीतिक अर्थशास्त्री एवं शिक्षाविद, पूर्व सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी), नई दिल्ली

2017 • 250 pages • PB (978-93-859-8553-9)

₹ 350

विकास का अर्थशास्त्र

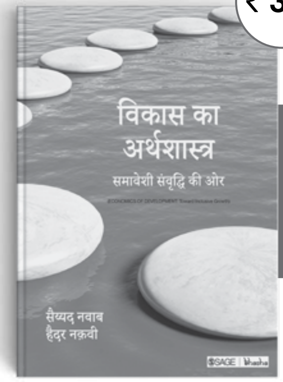

मराठी में भी उपलब्ध

समावेशी संवृद्धि की ओर

यह पुस्तक विकास तथा समावेशी संवृद्धि के तत्त्वों पर समीक्षात्मक दृष्टिकोण से चर्चा करती है। यह तर्क देती है कि संवृद्धि, आय वितरण और निर्धनता कम करने पर अलग-अलग ध्यान देने के बजाय विकास नीतियों का उद्देश्य समावेशी संवृद्धि होना चाहिए।

लेखक

सैय्यद नवाब हैदर नक़वी, एचईसी गणमान्य राष्ट्रीय प्रोफेसर, फेडरल उर्दू यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, इस्लामाबाद।

2017 • 290 pages • PB (978-93-864-4636-7)

₹ 525

ग्रामीण विकास 4e

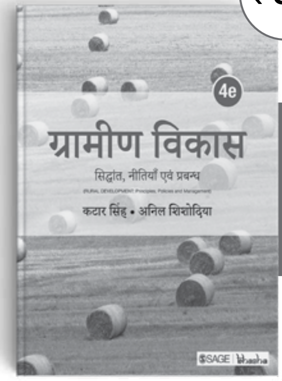

मराठी में भी उपलब्ध

सिद्धांत, नीतियाँ एवं प्रबन्ध

यह पुस्तक ग्रामीण विकास की बुनियादी अवधारणाओं, नीतिगत उपकरणों, रणनीतियों, नीतियों, कार्यक्रमों तथा ग्रामीण विकास प्रबंधन से संबंधित विषयों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। यह विकास के लिए मानव संसाधन की साध्य एवं साधन, दोनों रूपों में निर्णायक भूमिका पर जोर देती है।

लेखक

कटार सिंह, पूर्व निदेशक, ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद (आईआरएमए), गुजरात
अनिल शिशोदिया, इंफ़ॉर्मेशन/रिफ़रेंस सर्विस डिपार्टमेंट, कैलगरी पब्लिक लाइब्रेरी, कनाडा

2018 • 380 pages • PB (978-93-528-0634-8)

₹ 275

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण

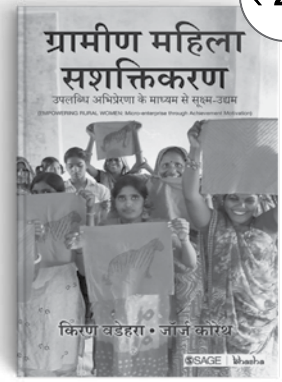

उपलब्धि अभिप्रेरणा के माध्यम से सूक्ष्म-उद्यम

यह किताब उन निर्धन, ग्रामीण, महिला उद्यमियों पर मौलिक शोध के जरिए अध्ययन करती है, जिनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा (अचीवमेंट मोटीवेशन) को बारीकी से मापा गया है। यह उपलब्धि अभिप्रेरणा की उपस्थिति/अनुपस्थिति और महिलाओं की उद्यम में सफलता/असफलता में संबंध स्थापित करती है।

लेखक

किरण वडेहरा एकॉर्ड संस्था के बोर्ड की सदस्य एवं कोरेथ कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड में सह-संस्थापक और निदेशक हैं।
जॉर्ज कोरेथ एकॉर्ड एशिया संस्था के सह-संस्थापक सदस्य, अध्यक्ष एवं कोरेथ कंसल्टिंग लिमिटेड के सह-संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं।

2017 • 208 pages • PB (978-93-864-4623-7)

₹ 395

भारत 2050

स्थायी समृद्धि की योजना

क्या भारत 2050 में उच्च-आय वाले देश का दर्जा प्राप्त कर सकता है? क्या देश में मानव विकास की स्थिति बेहतर होगी? यह पुस्तक संचार, व्यापार सेवाओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, शोध और नवप्रवर्तनों के नेतृत्व में व्यापार-उन्मुख सेवा क्षेत्र की केंद्रीयता पर बल देती है।

लेखक

रामगोपाल अग्रवाल, अध्यक्ष, पहले इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली

2017 • 424 pages • PB (978-93-859-8552-2)

₹ 525

भारत में सूक्ष्म वित्त

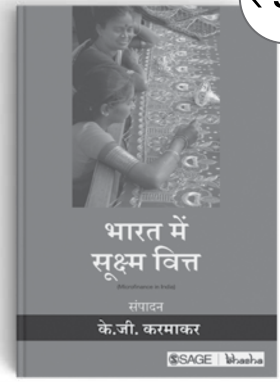

यह पुस्तक सूचनाप्रद होने के अलावा हमें देश में सूक्ष्म वित्त की समग्र स्थिति से अवगत कराती है और इस क्षेत्र के भविष्य की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। निबंधों में भारत में प्रगतिशील सूक्ष्म वित्त क्षेत्र की जटिलताओं को उजागर किया गया है।

संपादक

के.जी. करमाकर को भारतीय स्टेट बैंक, रिज़र्व बैंक एवं राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक में बतौर कार्यकारी कार्य करने का 36 वर्षों का अनुभव है।

2017 • 484 pages • PB (978-93-528-0394-1)

₹ 745

पर्यावरण अर्थशास्त्र

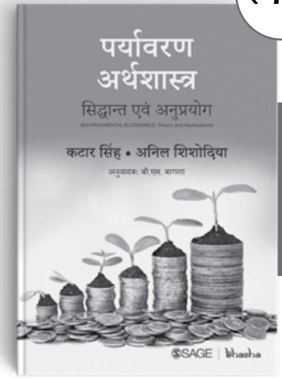

मराठी में भी उपलब्ध

सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग

सिद्धांत एवं प्रयोग पर आधारित यह पुस्तक, पर्यावरण अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणा को प्रस्तुत करती है। यह न केवल पर्यावरण संबंधी समस्याओं के मूल कारणों का पता लगाने और उनके समाधान की पहचान करने में, बल्कि पर्यावरण एवं प्रबंधन नीतियों का खाका तैयार करने में भी मददगार है।

लेखक

कटार सिंह, पूर्व निदेशक, ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणन्द (आईआरएमए), गुजरात
अनिल शिशोदिया, इंफ़ॉर्मेशन एंड रिफ़रेंस सर्विस डिपार्टमेंट, कैलगरी पब्लिक लाइब्रेरी, कनाडा

2019 • 360 pages • HB (978-93-532-8519-7)

₹ 375

पर्यावरण शिक्षण

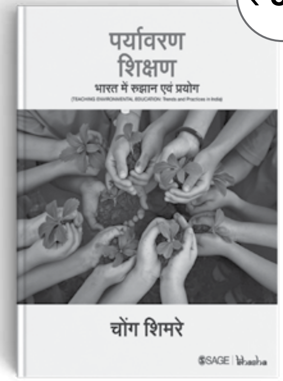

भारत में रुझान एवं प्रयोग

यह पुस्तक पर्यावरण शिक्षा की बुनियादी समझ के साथ ही स्कूल के पाठ्यक्रम में इसके समावेश के लिए मूल्यवान दिशानिर्देश प्रदान करती है। यह स्कूली पाठ्यक्रम में एक आवश्यक घटक के रूप में पर्यावरण शिक्षा के महत्व को स्थापित करती है।

लेखक

चोंग शिमरे एसोसिएट प्रोफ़ेसर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् और प्रशिक्षण (एनसीईआरटी), नई दिल्ली।

2018 • 286 pages • PB (978-93-528-0437-5)

₹ 350

पर्यावरण बोध

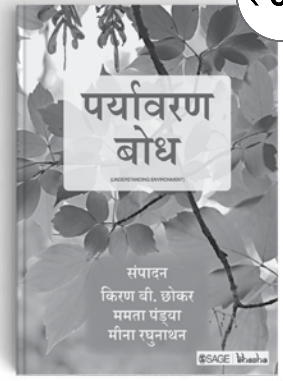

पर्यावरण विज्ञान में आधार और स्नातक पाठ्यक्रमों की मूल पाठ्यपुस्तक के तौर पर तैयार की गई यह किताब, छात्रों को पर्यावरण एवं संवहनीय विकास से संबंधित वैज्ञानिक अवधारणाओं से अवगत कराती है। इसे भारतीय संदर्भ को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

संपादक

किरण बी. छोकर स्कूल ऑफ़ प्लानिंग एंड एजुकेशन, नई दिल्ली में बतौर अतिथि शिक्षक कार्यरत हैं।
ममता पंड्या स्वतंत्र शिक्षा-संचार सलाहकार और संपादक हैं।
मीना रघुनाथन वर्ष 2005 से जीएमआर वरलक्ष्मी फाउंडेशन के साथ बतौर निदेशक (निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व) कार्यरत हैं।

2018 • 298 pages • PB (978-93-528-0666-9)

₹ 425

दूरस्थ शिक्षा और ई-लर्निंग में गुणवत्ता

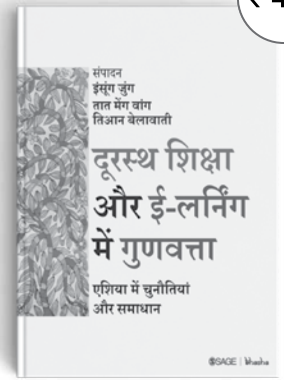

एशिया में चुनौतियां और समाधान

एशिया के चुनिंदा 16 डिस्टेंस एजुकेशन/ई-लर्निंग संस्थानों के अनुभव पर आधारित यह पुस्तक डिस्टेंस एजुकेशन में गुणवत्ता आश्वासन तंत्र का समावेश करने वाले नियामक ढांचे की जानकारी देती है और संबंधित उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में चुनौतियों का विश्लेषण कर संभावित हल देती है।

संपादक

इंसूंग जुंग अंतर्राष्ट्रीय क्रिश्चियन विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान में व्याख्याता हैं।
तात मेंग वांग वावासान एशियन एसोसिएशन ऑफ़ ओपन यूनिवर्सिटीज़ के अध्यक्ष पद पर रहे हैं।
तिआन बेलावाती इंटरनेशनल काउंसिल फ़ॉर ओपन एंड डिस्टेंस एजुकेशन (आईसीडीई) के अध्यक्ष हैं।

2017 • 308 pages • PB (978-93-864-4629-9)

₹ 675

भारतीय उच्च शिक्षा के पांच दशक

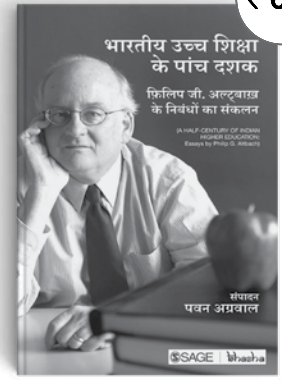

फ़िलिप जी. अल्ट्बाख़ के निबंधों का संकलन

इस पुस्तक में फ़िलिप जी. अल्ट्बाख़ की 34 रचनाओं का संकलन है। इन लेखों के माध्यम से ऐसे कई मुद्दों का अमूल्य विश्लेषण किया गया है, जिसने पिछले पांच दशकों की अवधि में भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को आकार दिया है।

संपादक

पवन अग्रवाल वर्तमान में भारत के योजना आयोग में बतौर उच्च शिक्षा सलाहकार सेवारत हैं। इससे पहले वे मानव संसाधन मंत्रालय में निदेशक के पद पर पदस्थ रह चुके हैं।

2018 • 498 pages • PB (978-93-528-0446-7)

₹ 250

चिन्ता विकार

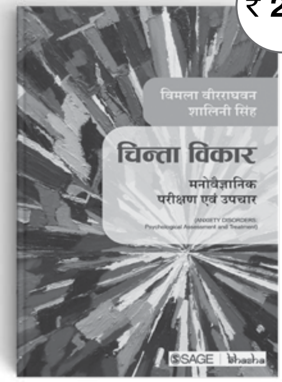

मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं उपचार

इस पुस्तक में चिन्ता विकार के निदान की कई चिकित्सकीय पद्धतियों का वर्णन है। यह विभिन्न रणनीतियों के संयोजन की प्रभावशीलता को दर्शाती है, जो इस विकृति से जूझ रहे व्यक्तियों में इसके लक्षणों को दूर करने और पुनरावृत्ति को रोकने में सक्षम हैं।

लेखक

विमला वीरराघवन मनोविज्ञान एवं अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय (साउथ कैम्पस) की प्रमुख रह चुकी हैं। **शालिनी सिंह** अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय (साउथ कैम्पस) में व्याख्याता रह चुकी हैं।

2018 • 184 pages • PB (978-93-528-0388-0)

₹ 425

अधिगम अक्षमता

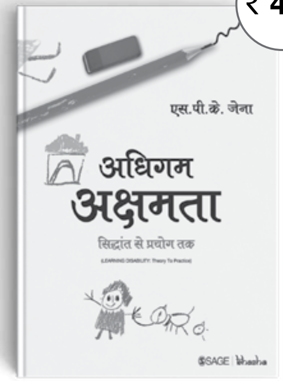

सिद्धांत से प्रयोग तक

यह पुस्तक अधिगम अक्षमता के निवारण के सिद्धांतों और मौजूदा प्रयोगों पर नई जानकारियां प्रदान करती है तथा विभिन्न मामलों के अध्ययनों के ज़रिये हस्तक्षेप की दो प्रमुख तकनीकों, संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा और कंप्यूटर की मदद से निर्देश की चिकित्सीय प्रभावशीलता को दर्शाती है।

लेखक

एस.पी.के. जेना, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

2018 • 288 pages • PB (978-93-528-0754-3)

₹ 350

आरंभिक वर्षों की शिक्षा में विविधता, विशेष आवश्यकताएँ तथा समावेशन

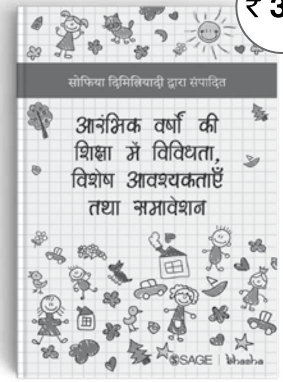

यह पुस्तक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अन्य बच्चों से पृथक करने के बजाय शिक्षण की विधियों में परिवर्तन के ज़रिये शैक्षणिक संस्थानों में सभी के समावेशन हेतु तर्क प्रस्तुत करती है। पुस्तक में विभिन्न देशों के मामलों के अध्ययन भी दिए गए हैं।

संपादक

सोफिया दिमित्रियादी अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन विभाग, एथेंस यूनिवर्सिटी ऑफ़ एप्लाइड साइंस, ग्रीस में अर्ली ईयर्स एजुकेशन विषय की व्याख्याता हैं।

2017 • 238 pages • PB (978-93-528-0434-4)

₹ 545

विकास से हारेगा नक्सलवाद

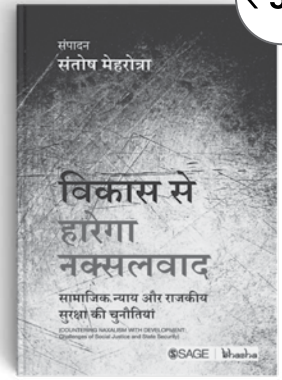

सामाजिक न्याय और राजकीय सुरक्षा की चुनौतियां

विकास से हारेगा नक्सलवाद 'भारत की आंतरिक सुरक्षा को सर्वाधिक गंभीर खतरा' कहे जाने वाले नक्सलवाद को मंच प्रदान करने वाले भारत के क्षेत्र विशेष में विकास के समक्ष आने वाली चुनौतियों का गहन परीक्षण है। विशेषज्ञों के एक अतिकुशल सुविज्ञ समूह ने भारत के उग्रवाद-प्रभावित जिलों में जमीनी स्तर पर कार्य किया है। ये विशेषज्ञ समस्या के सुरक्षा-दृष्टिकोणों की उपेक्षा न करते हुए, बढ़ रहे नक्सलवाद की समस्या का समाधान किस प्रकार बातचीत और विकास की पहल से किया जाए इसका एक सर्वसम्मत दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

संपादक

संतोष मेहरोत्रा, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं।

2019 • 184 pages • HB (978-93-532-8602-6)

₹ 645

महिलाएं एवं शांति की राजनीति

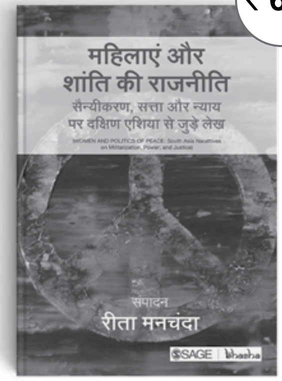

सैन्यीकरण, सत्ता और न्याय पर दक्षिण एशिया से जुड़े लेख

दक्षिण एशियाई शांति के लिए कार्यरत महिलाओं के दृष्टिकोण और मूल्यों से प्रेरित यह संकलन वैश्विक स्तर पर महिला शांति और सुरक्षा का तार्किक प्रस्तुतीकरण है। यह पुस्तक संघर्ष तथा मतभेद के बाद की परिस्थितियों का सामना करती महिलाओं पर केंद्रित है।

लेखक

रीता मनचंदा, साउथ एशिया फोरम फॉर ह्यूमन राइट्स की शोध निदेशक हैं।

2019 • 332 pages • HB (978-93-532-8530-2)

₹ 645

वैश्विक जिहाद और अमेरिका

मराठी में भी उपलब्ध

इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान से परे सौ साल का युद्ध

यह पुस्तक इस धारणा पर सवाल उठाती है कि इस्लामवादी आतंकवाद या "वैश्विक जिहाद" पूर्व और पश्चिम में आधुनिक सभ्यता के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है। पुस्तक विश्लेषण करती है कि क्या परस्पर-विरोधी होते हुए इस्लामी और पश्चिमी सभ्यताओं का एक-दूसरे से टकराव नियत है।

लेखक

ताज हाश्मी, ऑस्टिन पी स्टेट युनिवर्सिटी, टेनेसी, संयुक्त राज्य अमेरिका में आपराधिक न्याय के अनुबद्ध प्रोफ़ेसर और इतिहास व सुरक्षा अध्ययन के सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं।

2019 • 348 pages • HB

₹ 645

भारत में राज्य, प्रजातन्त्र और आतंक-विरोधी कानून

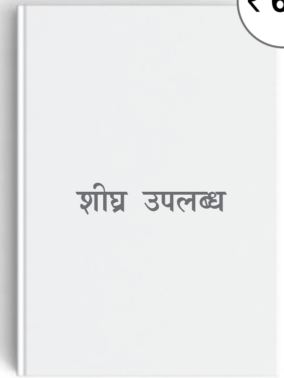

हिंदुत्व, केंद्र-राज्य संबंध, राजनीति, गरीबी और विकास के मुद्दों के साथ पोटा और टाडा जैसे आतंकवाद निरोधक कानूनों के जटिल अंतर्संबंधों को प्रदर्शित करती यह विचारोत्तेजक, सामयिक और गहन रूप से शोधित पुस्तक राजनीतिशास्त्र, विधिशास्त्र, समाजशास्त्र और मानवाधिकार के छात्रों और विद्वानों का ध्यान आकर्षित करेगी ।

लेखक

उज्ज्वल कुमार सिंह राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हैं।

2019 • 352 pages • HB

₹ 450

भारत में महिलाओं के विरुद्ध साइबर अपराध

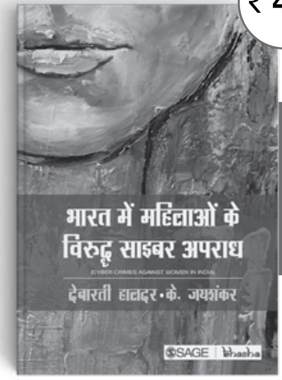

मराठी में भी उपलब्ध

यह पुस्तक किशोरवय युवतियों और महिलाओं को लक्ष्य करने वाले ऑनलाइन अपराधों पर आधारित सामाजिक-कानूनी शोध के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह बताती है कि कैसे महिलाएं ट्रोलिंग, ऑनलाइन ग्रूमिंग, निजता पर आक्रमण, यौनिक मानहानि, मॉर्फिंग आदि की आसान शिकार बन जाती हैं।

लेखक

देबारती हालदर लीगल स्टडीज़ यूनाईटेडवर्ल्ड स्कूल ऑफ़ लॉ, अहमदाबाद, गुजरात में प्रोफ़ेसर और सेंटर फ़ॉर साइबर विक्टिम काउंसलिंग, भारत की प्रबंध निदेशक (मानद्) हैं। **के.जयशंकर** अपराध विज्ञान विभाग, रक्षा शक्ति विश्वविद्यालय (पुलिस और आंतरिक सुरक्षा विश्वविद्यालय), अहमदाबाद, गुजरात में प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष हैं।

2019 • 272 pages • PB (978-93-532-8302-5)

₹ 325

मानव तस्करी से संघर्ष

नीति और कानून में कमियां

यह पुस्तक मानव तस्करी के विषय पर नए सिरे से परिचर्चा आरंभ करते हुए इस अंतर्राष्ट्रीय अपराध पर अंकुश लगाने हेतु सुझाव देती है। इस समस्या के समाधान के लिए, यह पुस्तक इस अपराध के विभिन्न आयामों का अन्वेषण एवं वर्गीकरण करती है।

लेखक

वीरेन्द्र मिश्रा सचिव, केन्द्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (कारा), महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार

2017 • 320 pages • PB (978-93-859-8557-7)

₹ 275

प्रभावपूर्ण प्रस्ताव लेखन

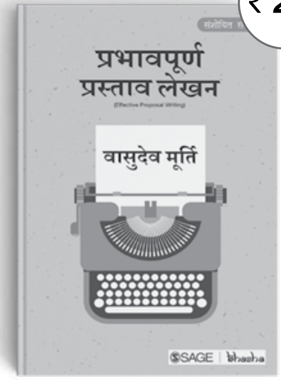

यह पुस्तक औपचारिक व्यापारिक कार्यों के महत्त्वपूर्ण हिस्से 'गुणवत्तापूर्ण प्रस्ताव लेखन' के रहस्य से परदा हटाती है। यह पाठक की विस्तृत और पेशेवर दस्तावेज़ तैयार करने में सहायता करेगी। व्यावहारिक और दिलचस्प तरीके से लिखी गई यह पुस्तक विभिन्न पेशेवरों के लिए बहुमूल्य है।

लेखक

वासुदेव मूर्ति बेंगलुरु, भारत में प्रबंधन सलाहकार हैं। उन्हें तकनीक, प्रबंधन और प्रशिक्षण के क्षेत्र में तीस से अधिक वर्षों का अनुभव है।

2017 • 164 pages • PB (978-93-528-0245-6)

₹ 300

शैक्षणिक लेखन

प्रबंधन के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शिका

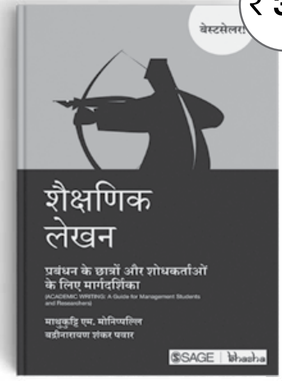

यह पुस्तक छात्रों और शोधकर्ताओं को बेहतर असाइंमेंट्स, शोध प्रबंध और प्रकाशन के लिए प्रबंध लिखने में सहायता करती है। यह ज्ञान निर्माण और ज्ञान प्रसार प्रक्रिया में अकादमिक लेखन को एक अभिन्न हिस्से के रूप में प्रस्तुत करती है।

लेखक

माथुकुट्टि एम. मोनिप्पल्लि भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद, भारत में संचार विभाग में प्रोफ़ेसर रहे हैं। **बद्रीनारायण शंकर पवार** राष्ट्रीय बैंक प्रबंध संस्थान की इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ बैंकिंग एंड फायनेंस चेयर में प्रोफ़ेसर हैं।

2017 • 232 pages • PB (978-93-528-0375-0)

₹ 440

आर.टी.आई. से पत्रकारिता

मराठी में भी उपलब्ध

खबर, पड़ताल, असर

इस पुस्तक में लेखक आरटीआई के माध्यम से समाचार इकट्ठा करने और उन्हें आगे बढ़ाने के बारे में बताते हैं। इसमें सिद्धांत के बजाय व्यावहारिक पहलुओं पर बल दिया गया है, जिससे यह 'बड़ी ख़बरों के पीछे की कहानी' बताने वाली पुस्तक बन जाती है।

लेखक

श्यामलाल यादव द इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली के वरिष्ठ संपादक हैं। उन्हें दुनियाभर में अपनी खोजी पत्रकारिता के लिए जाना जाता है।

2019 • 260 pages • PB (978-93-532-8286-8)

₹ 500

इंडिया कनेक्टेड

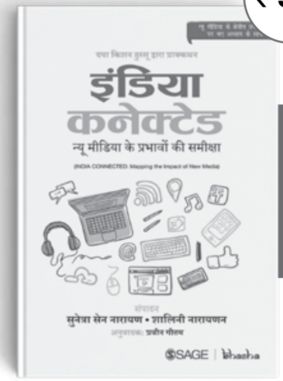

मराठी में भी उपलब्ध

न्यू मीडिया के प्रभावों की समीक्षा

यह पुस्तक भारत में न्यू मीडिया के विकास का समीक्षात्मक परीक्षण करती है। यह बताती है कि भारतीय संदर्भ में न्यू मीडिया का सिद्धांतीकरण कैसे होगा और साथ ही 'डिजिटल इंडिया' के समय में मीडिया को प्रभावित करने वाले पहलुओं का अध्ययन करती है।

लेखक

सुनेत्रा सेन नारायण भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं।
शालिनी नारायणन संचार सलाहकार हैं और भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर रह चुकी हैं।

2019 • 340 pages • PB (978-93-532-8222-6)

₹ 345

स्वतंत्रता के लिए परिधान

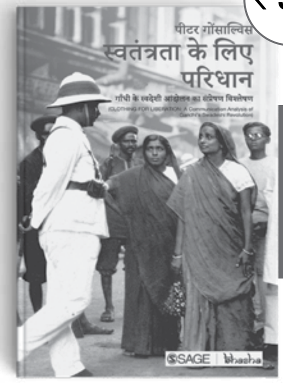

मराठी में भी उपलब्ध

गाँधी के स्वदेशी आंदोलन का संप्रेषण विश्लेषण

यह पुस्तक 30 करोड़ लोगों के आंदोलन को आयोजित करने में महात्मा गाँधी के पहनावे की शैली और स्वदेशी कपड़ों के उपयोग की संप्रेषण शक्ति का अन्वेषण करती है। यह कम्यूनिकेशन स्टडीज़, राजनीति, इतिहास, संकेतविज्ञान और संस्कृति अध्ययन के छात्रों के लिए उपयोगी है।

लेखक

पीटर गोंसाल्विस, सलिज़ियन पॉन्टिफिकल यूनिवर्सिटी, रोम

2018 • 200 pages • PB (978-93-528-0786-4)

₹ 525

भारतीय मीडिया व्यवसाय 4e

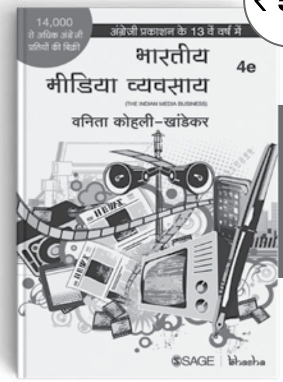

मराठी में भी उपलब्ध

यह पुस्तक भारत में मीडिया व्यवसाय के विभिन्न खंडों यथा प्रिंट, टेलीविज़न, फ़िल्म, संगीत, रेडियो, डिजिटल, आउट-ऑफ़-होम और इवेंट्स पर विस्तृत विश्लेषण प्रदान करती है। इस पुस्तक को मीडिया पेशेवरों, छात्रों, भारतीय मीडिया एवं मनोरंजन व्यवसाय के निवेशकों को अवश्य पढ़ना चाहिए।

लेखक

वनिता कोहली-खांडेकर मीडिया विशेषज्ञ और लेखिका हैं।

2017 • 460 pages • PB (978-93-515-0685-0)

₹ 550

सफल गुणात्मक अनुसंधान

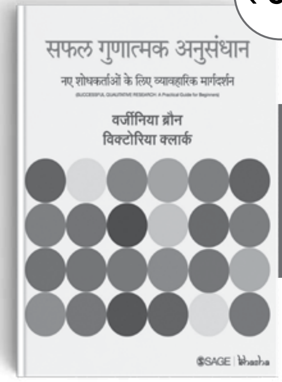

मराठी में भी उपलब्ध

नए शोधकर्ताओं के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन

यह एक सरल एवं व्यावहारिक पाठ्यपुस्तक है जो सफल गुणात्मक अनुसंधान करने के लिए सुझाव और कौशल प्रदान करती है। यह पाठ्यपुस्तक गुणात्मक अनुसंधान का अध्ययन या शोध परियोजना में गुणात्मक विधियों का प्रयोग कर रहे स्नातक, स्नातकोत्तर छात्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

लेखक

विक्टोरिया क्लार्क, वेस्ट ऑफ इंग्लैंड विश्वविद्यालय, यूके
वर्जीनिया ब्रौन, ऑकलैंड विश्वविद्यालय, न्यूजीलैंड

2018 • 220 pages • PB (978-93-515-0663-8)

₹ 525

सांख्यिकी 3e

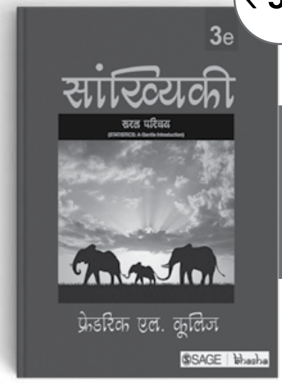

मराठी में भी उपलब्ध

सरल परिचय

यह पुस्तक परिचयात्मक सांख्यिकी को आसान बनाती है। इसे छात्रों की मुश्किलें घटाने और अनावश्यक सूत्रों को न्यूनतम रखने के लिए लिखा गया है। पुस्तक में बुनियादी सांख्यिकीय डिज़ाइन और विश्लेषण की व्यापक समीक्षा भी दी गई है।

लेखक

फ्रेडरिक एल. कूलिज ने फ़्लोरिडा विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में बीए, एमए और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है।

2017 • 476 pages • PB (978-93-515-0664-5)

₹ 625

गुणात्मक अनुसंधान 4e

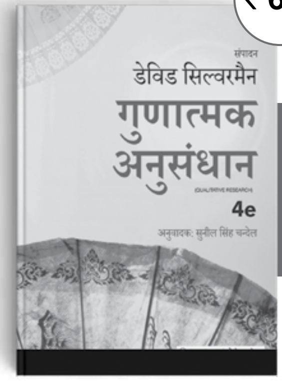

मराठी में भी उपलब्ध

प्रस्तुत पुस्तक में उत्कृष्ट गुणात्मक शोधकर्ताओं के लेखों को शामिल किया गया है, जिनमें से प्रत्येक ने गुणात्मक शोध में अपनी विशेषज्ञता के विषय पर लेखन किया है। यह पुस्तक गुणात्मक अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत सभी छात्रों के लिए आदर्श पुस्तक है।

संपादक

डेविड सिल्वरमैन बिज़नेस स्कूल, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

2018 • 400 pages • PB (978-93-528-0862-5)

₹ 275

शोध प्रस्ताव कैसे करें तैयार

मराठी में भी उपलब्ध

इस आसान और जानकारीपूर्ण किताब में लेखिकाएं बताती हैं कि रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए अनुदान प्राप्त करने या रिसर्च डिग्री प्रोग्राम से जुड़ने के लिए कैसे प्रभावशाली शोध प्रस्ताव तैयार किया जाये। यह पुस्तक शोध प्रस्ताव पढ़ने वालों की अपेक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

लेखक

पैम डेनिकोलो यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग और अन्य विभिन्न संस्थानों में, शोध, शिक्षण, लेखन तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की कार्यकारी समितियों से जुड़ी रही हैं।
लुसिंडा बेकर यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग में एक पुरस्कृत वरिष्ठ व्याख्या और टीचिंग फैलो व पेशेवर प्रशिक्षक हैं। उन्होंने कई सफल अध्ययन मार्गदर्शक पुस्तकों का लेखन किया है।

2017 • 132 pages • PB (978-93-859-8555-3)

₹ 375

रिसर्च प्रोजेक्ट करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन, 2e

मराठी में भी उपलब्ध

यह पुस्तक छात्रों को 'अनभिज्ञ' से 'जानकार' बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। यह पुस्तक प्रत्येक अध्याय में रिसर्च प्रोजेक्ट के विभिन्न चरणों की व्याख्या करते हुए प्रोजेक्ट की शुरुआत से लेकर उसे लिखने तक पाठकों का मार्गदर्शन करती है।

लेखक

ज़िना ओ'लियरी द ऑस्ट्रेलिया एंड न्यूज़ीलैंड स्कूल ऑफ गवर्नमेंट

2017 • 344 pages • PB (978-93-515-0667-6)

₹ 475

शोध कार्यप्रणाली 4e

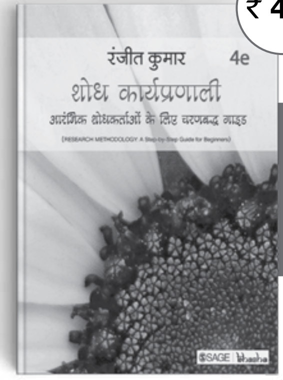

मराठी में भी उपलब्ध

आरंभिक शोधकर्ताओं के लिए चरणबद्ध गाइड

शोध कार्यप्रणाली, ऐसे लोगों के लिए लिखी गई है, जिन्हें शोध अथवा शोध विधियों के संदर्भ में कोई पूर्व अनुभव नहीं है। सहायक तकनीकों एवं उदाहरणों के कारण यह पुस्तक सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान की इच्छा रखने वाले छात्रों के लिए पठनीय है।

लेखक

रंजीत कुमार, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया

2017 • 432 pages • PB (978-93-515-0662-1)

₹ 395

दिल्ली था जिसका नाम

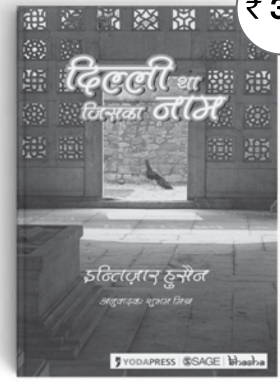

किसी इतिहासकार ने खूब कहा है कि सिकंदर के ज़माने से, जिन्होंने दिल्ली त्रिकोण पर फ़तेह पाई या यहाँ डेरा डाला अगर उन सब को पढ़ा जाए तो यूँ समझ लीजिये कि आपने पूरी दुनिया के इतिहास की एक वैकल्पिक लिखावट की पढाई कर ली। दिल्ली था जिसका नाम, इन्तिज़ार साहब की ऐसी ही एक कोशिश है। अनेकों बार उजड़ने सँवरने की इस दास्तान में राजे-महाराजेतो अपने महल-महलात में विराजमान हैं ही, उनकी रियाया के रंग-ढंग का भी ख़ूबसूरत नक़्शा है।

लेखक

इन्तिज़ार हुसैन

अनुवादक

शुभम मिश्र

2016 • 220 pages • PB (978-93-515-0892-2)

हमारी हिंदी पुस्तकों की पूरी सूची के लिए ब्राउज़ करें

www.sagebhasha.com

सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए आवश्यक

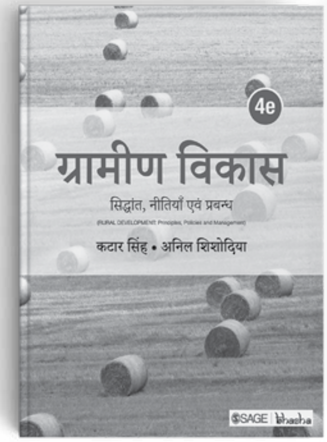

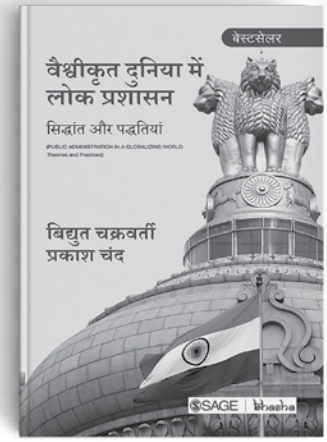

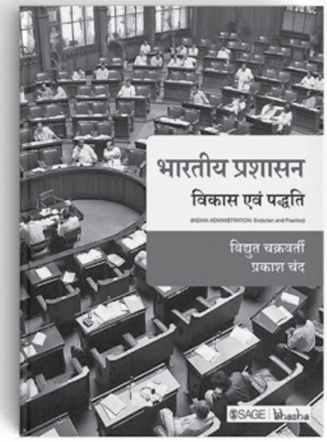

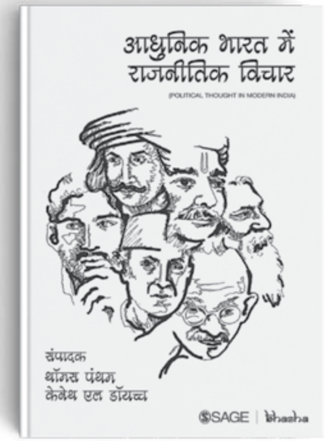

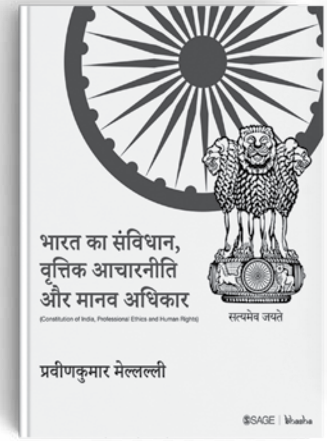

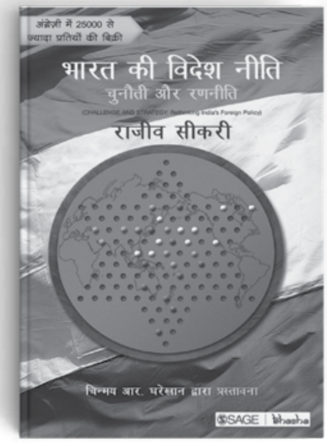

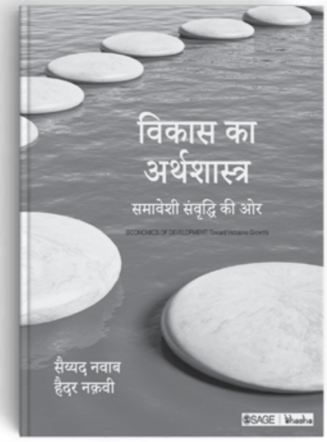

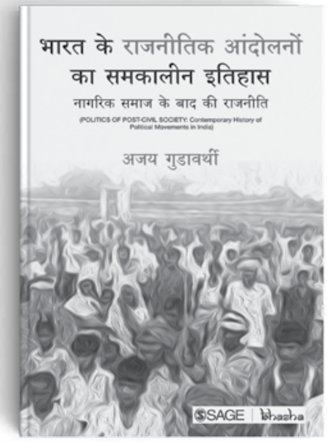

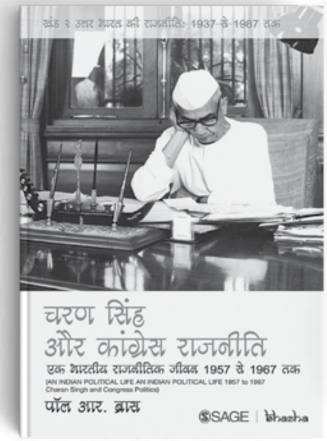

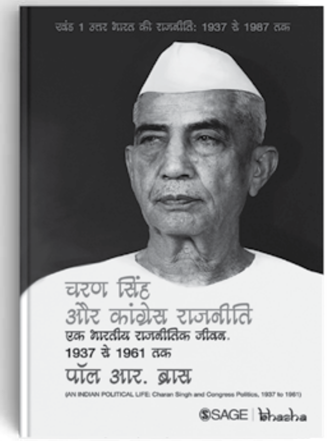

आगामी पुस्तकें

₹ 1200
(tent.)

भारतीय दलित चिन्तक

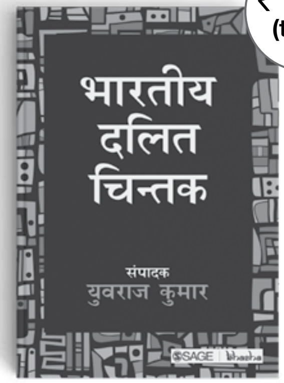

विवरण

यह पुस्तक दलित साहित्य में सबसे अद्यतन योगदान के रूप में भारतीय दलित चिंतकों के बारे में बेहतर समझ विकसित करने के साथ ही दलित साहित्य में एक नया आयाम जोड़ती है। इस पुस्तक में विभिन्न भारतीय दलित चिंतकों की अवधारणाओं, विचारधाराओं और सिद्धांतों का समावेश है।

लेखक

युवराज कुमार वर्तमान में सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक विभाग, पी.जी.डी.ए.वी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के पद पर कार्यरत हैं।

2019 • 440 pages • HB (978-93-532-8702-3)

₹ 1025
(tent.)

नारी देह के विरूद्ध हिंसा

विवरण

पुरुष-प्रधान समाज में नारी देह, यौन अधिकार एवं चयन सम्बंधी विषयों पर आज भी खुलकर विमर्श करने से परहेज किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक ऐसी ही कुछ ज्वलंत और उभरती हुई चुनौतियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास है।

लेखक

नेहा चौधरी डी.ए.वी. पी.जी कालेज. वाराणसी, उत्तर प्रदेश में समाजशास्त्र की असिस्टेंट प्रोफेसर हैं

2019 • 340 pages • HB (978-93-532-8736-8)

मीडिया कानून और आचार संहिता

विवरण

प्रस्तुत पुस्तक पत्रकारिता की दुनिया को अपने पाठ्यक्रम की सहायता से समझने की कोशिश कर रहे विद्यार्थियों को व्यावहारिक समझ प्रदान करने के साथ ही इस क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों को लंबे समय तक न सिर्फ़ 'बने रहने', बल्कि सजग और सचेत रहने के भी अहम 'टिप्स' देती है।

लेखक

शालिनी जोशी, असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, राजस्थान

2019 • 240 pages • HB

हिंदी में प्रकाशित नई शोध पत्रिकाएं

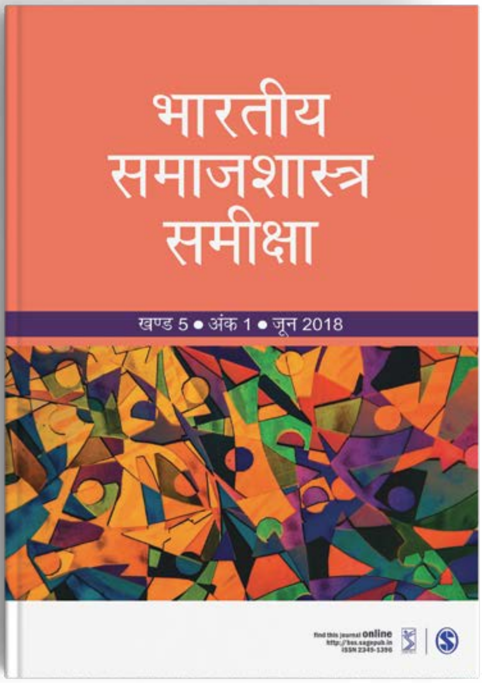

bss.sagepub.in

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा

इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी के सहयोग से प्रकाशित

प्रबन्ध संपादकः बी. के. नागला, समाजशास्त्र के पूर्व प्राध्यापक, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

1951 से ही, इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी भारत में समाजशास्त्र के छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों की एकमात्र संस्था के रूप में 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' का प्रकाशन कर रही है। सोसाइटी गैर–अंग्रेजी भाषी शोधकर्ताओं हेतु हिंदी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में सामाजिक लेखन को बढ़ावा देती रही है। 2013 में सोसाइटी ने 'भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा' के रूप में हिंदी भाषा में पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय भाषाओं में समाजशास्त्र के पाठकों को उत्कृष्ट मंच प्रदान करना है। पत्रिका सामाजिक ज्ञान की विविधता, उसके उत्पादन और वितरण को समायोजित करती है।

प्रत्येक वर्ष 2 अंकों का प्रकाशन (जून एवं दिसम्बर)
2349-1396

अपनी रचनाएं **bnagla@yahoo.com** पर ईमेल द्वारा भेजें।

smv.sagepub.in

सामाजिक विमर्श

काउंसिल फॉर सोशल डेवलपमेंट के सहयोग से प्रकाशित।

संपादकः प्रोफेसर के.एल. शर्मा, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी

सामाजिक विमर्श सामयिक व ऐतिहासिक समीक्षा पर आधारित पत्रिका है। इसके प्रकाशन का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सकारात्मक हस्तक्षेप करना, सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करना, प्रसार करना तथा पठान सामग्री उपलब्ध कराना, अकादमिक जगत और वृहत्तर समाज के मध्य समन्वय स्थापित करना, आसान भाषा में स्थानिक आख्यानों और विमर्शों को समाज वैज्ञानिक विमर्श की मुख्यधारा में शामिल करना है। इसमें सैद्धांतिक आलेखों के साथ ही अनुभवजन्य जमीनी शोध कार्यों और सामयिक मुद्दों को महत्ता दी जाएगी।

प्रत्येक वर्ष 2 अंकों का प्रकाशन (जून एवं दिसम्बर)
2581-6543

अपनी रचनाएं **samajik@csdindia.org** पर ईमेल द्वारा भेजें।

अधिक जानकारी के लिए sagebhasha@sagepub.in को लिखें!

कृपया ध्यान दें, दी गई जानकारी प्रकाशन के समय तक सही है। कीमतें बिना किसी पूर्वसूचना के बदली जा सकती हैं।

Introducing

SAGE e-vidya

The premier social science and management ebook digital library

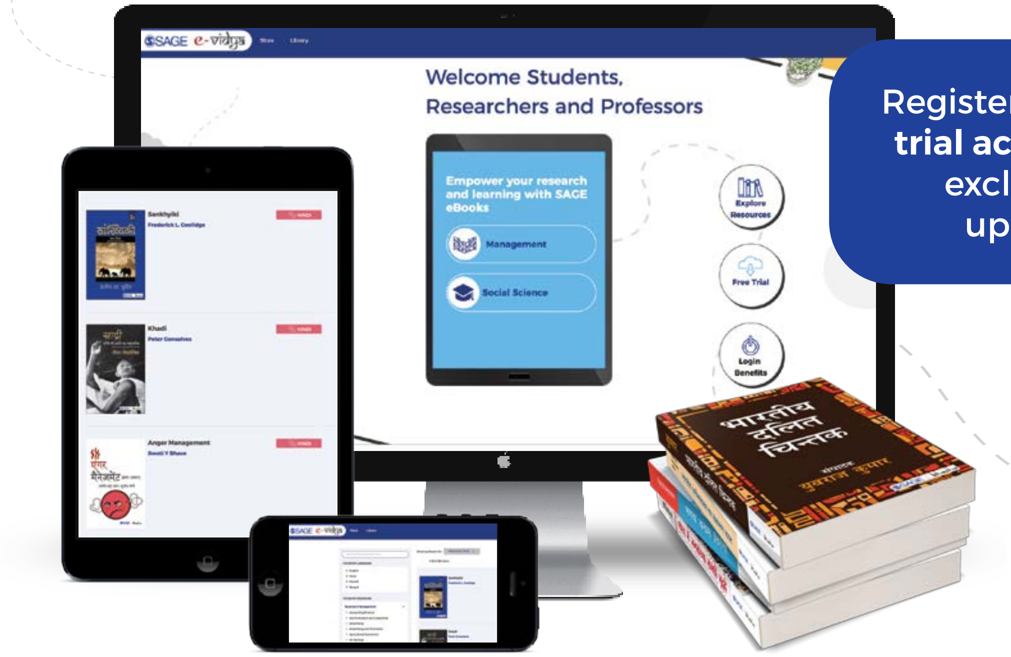

Register today for a **free trial access** to avail an exclusive annual upgrade offer.

A virtual library at your fingertips

SAGE e-Vidya is a state-of-art premier digital library, containing close to 1300 social sciences and management titles in English, Hindi and Marathi. Through this platform, we aim to make accessible SAGE's award winning content to Social Sciences and Management libraries across South Asia.

SAGE e-Vidya Collection

SOCIAL SCIENCE COLLECTION	MANAGEMENT COLLECTION	SAGE BHASHA (HINDI)	SAGE BHASHA (MARATHI)
890+	240+	85+ titles	50+ titles

Write to us at
evidya@sagepub.in

Order the Complete Collection NOW!

Pick and Choose option is also available

Two easy ways to order our books in the catalogue!

For fastest delivery, go to

www.sagepub.in

marketing@sagepub.in
sales@sagepub.in

Please note that information is correct at the time of print.
Prices are subject to change without notice.

https://evidya.sagepub.in